श्री आचार्य - [illegible]

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

[illegible]
1.11.29

आज फिर मुझे यहां गुरुकुल में आकर बहुत खुशी हुई।

9.5

जवाहरलाल नेहरू

मुझे गुरुकुल वृन्दावन देखने का अवसर मिला। मैंने अपने विचार अभी सभा में प्रकट किये हैं। यह संस्था देश और समाज की इस भाव से सेवा कर रही है। मैं इसकी उन्नति चाहता हूं।

गोविन्द वल्लभ पन्त
25.10.48

Sd. गोविन्द वल्लभ पन्त

पंचवर्षीय
नियमावली तथा पाठविधि

जून १९७४

प्रस्तोता

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

ओ३म्

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

—संक्षिप्त परिचय—

१. आदर्श—

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन, भारत की एक प्रमुख राष्ट्रिय शिक्षा संस्था है जो ७५ वर्ष से भी अधिक काल से अपनी विशिष्ट शिक्षण पद्धति द्वारा देश की वहुमूल्य सेवा कर रही है। आज से ७५ वर्ष पूर्व, जब कि देश का सारा वातावरण विदेशीय आदर्शों से अनुप्राणित एवं प्रभावित था और शिक्षण-क्षेत्र में राष्ट्रिय चेतना का उद्भव भी नहीं हुआ था उस समय, भारत में प्रचलित विदेशीय शिक्षा-प्रणाली के प्रति विद्रोह कर, राष्ट्रिय शिक्षा का एक क्रियात्मक आदर्श देश के सामने प्रस्तुत करने की उदात्त भावना से आर्य समाज के नेताओं ने इस संस्था की स्थापना की थी।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायी प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनन्योपासक, एवं उसके पुनरुज्जीवन के लिए कृत-संकल्प थे। मानव जीवन के अभ्युदय एवं निःश्रेयस् के सभी उदात्त आदर्श प्राचीन वैदिक संस्कृति के भीतर समाविष्ट हैं। मानव तथा राष्ट्र के कल्याण के लिए जो कुछ भी, "सत्यं, शिवं और सुन्दरं" इस विश्व में है उस सबका समन्वय प्राचीन भारतीय संस्कृति में मिल सकेगा। इसलिए प्राचीन भारतीय संस्कृति के आदर्शों से अनु-

प्रकाशक :
गुरुकुल विश्वविद्यालय,
वृन्दावन

मुद्रक :
आगरा फाइन आर्ट प्रेस,
राजामंडी, आगरा-२

ओ३म्

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

—संक्षिप्त परिचय—

१. आदर्श—

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन, भारत की एक प्रमुख राष्ट्रिय शिक्षा संस्था है जो ७५ वर्ष से भी अधिक काल से अपनी विशिष्ट शिक्षण पद्धति द्वारा देश की बहुमूल्य सेवा कर रही है। आज से ७५ वर्ष पूर्व, जब कि देश का सारा वातावरण विदेशीय आदर्शों से अनुप्राणित एवं प्रभावित था और शिक्षण-क्षेत्र में राष्ट्रिय चेतना का उद्भव भी नहीं हुआ था उस समय, भारत में प्रचलित विदेशीय शिक्षा-प्रणाली के प्रति विद्रोह कर, राष्ट्रिय शिक्षा का एक क्रियात्मक आदर्श देश के सामने प्रस्तुत करने की उदात्त भावना से आर्य समाज के नेताओं ने इस संस्था की स्थापना की थी।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायी प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनन्योपासक, एवं उसके पुनरुज्जीवन के लिए कृत-संकल्प थे। मानव जीवन के अभ्युदय एवं निःश्रेयस् के सभी उदात्त आदर्श प्राचीन वैदिक संस्कृति के भीतर समाविष्ट हैं। मानव तथा राष्ट्र के कल्याण के लिए जो कुछ भी, "सत्यं, शिवं और सुन्दरं" इस विश्व में है उस सबका समन्वय प्राचीन भारतीय संस्कृति में मिल सकेगा। इसलिए प्राचीन भारतीय संस्कृति के आदर्शों से अनु-

प्राणित गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति ही देश के लिए कल्याण-कारिणी शिक्षा-पद्धति हो सकती है इसी निष्ठा से गुरुकुल की स्थापना की गई थी।

२. मूल प्रेरणा—

आर्य समाज के नेताओं को गुरुकुल की स्थापना करने की मूल प्रेरणा ऋषि दयानन्द के 'सत्यार्थ प्रकाश' में प्रतिपादित शिक्षा सिद्धान्तों से प्राप्त हुई थी। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है—

"जन्म से पांचवें वर्ष तक बालकों को माता, छठे वर्ष से आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा प्रदान करे। नवें वर्ष के आरम्भ में अपनी सन्तानों को गुरुकुल में, जहाँ पूर्ण विद्वान् पुरुष और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाले हों विद्याभ्यास के लिए भेजदें।

वहाँ जो अध्यापिका और अध्यापक व भृत्य अनुचर आदि हों वे कन्याओं के गुरुकुल में सब स्त्री, और बालकों के गुरुकुल में सब पुरुष हों।

सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जावें। चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हों चाहे दरिद्र की सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिए।

इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि आठवें वर्ष के आगे कोई अपने लड़के लड़कियों को घर में रख न सके। गुरुकुल अवश्य भेजदें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो।"

ऋषि दयानन्द के इन्हीं वाक्यों से प्रेरणा प्राप्त कर आज से ७५ वर्ष पूर्व आर्यसमाज के नेताओं ने इस गुरुकुल की स्थापना की थी।

३. शिक्षा क्षेत्र में गुरुकुल पद्धति की मौलिक देन—

गुरुकुल की स्थापना द्वारा आर्य-समाज ने भारत के वर्तमान शिक्षण-क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण आदर्श उस समय उपस्थित किए थे, वे

सार्वभौम और शाश्वत आदर्श थे, इसलिए आज भी उनकी उपयोगिता वैसी ही अक्षुण्ण है जैसी आज से ७५ या पचहत्तर वर्ष पूर्व थी। गुरुकुल पद्धति के उन मौलिक आदर्शों को हम निम्न रूप से परिगणित कर सकते हैं :—

१—आठ वर्ष से पच्चीस वर्ष तक का काल बालकों का शिक्षणकाल है। इस काल में बालकों को अनिवार्य रूप से ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करते हुए गुरुजनों के अधीन रहकर विद्योपार्जन करना चाहिए।

२—विद्यार्थी-जीवन कठोर तपस्या-पूर्ण ब्रह्मचर्य जीवन होना चाहिए।

३—ब्रह्मचारी की शिक्षणशाला का रूप घर से अलग परन्तु वास्तविक 'कुल' या 'परिवार' का रूप होना चाहिए। इस परिवार का अध्यक्ष आचार्य है। आचार्य के सहयोगी गुरुजन उनके कनिष्ठ भ्राता, और ब्रह्मचारी गण उनके पुत्र हैं। ये सब मिलकर एक परिवार या 'गुरुकुल' है। परिवार के सभी सदस्यों, अर्थात् आचार्य, गुरु, शिष्य सबको एक ही स्थान पर एक ही आश्रम में मर्यादा पूर्वक रहना चाहिए।

४—गुरुकुल में रहने वाले सब ब्रह्मचारी परस्पर सहोदर एक ही सावित्री माता के उदर में रहने वाले—सहोदर भाई हैं। यह भ्रातृ-भावना ही वह मौलिक तथ्य है जो वैदिक साम्यवाद की जननी है। इसी आधार-भित्ति पर वर्ग-संघर्ष-विहीन, एक आदर्श राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

५—ब्रह्मचारी के मानसिक विकास के साथ उसके चरित्र के निर्माण और उसकी शारीरिक एवं आत्मिक शक्तियों के भी विकास का अवसर देना और उसके विकास के साधन जुटाना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। अतएव हमारी शिक्षा 'धर्म विहीन शिक्षा' नहीं, अपितु 'धर्म-प्रधान' शिक्षा होनी चाहिए। विद्यार्थी के जीवन में

आस्तिकता एवं धार्मिक भावना का पुट दिए बिना वह राष्ट्र के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकता है।

६—शिक्षा का माध्यम 'मातृ-भाषा' ही होनी चाहिए। समस्त विद्याओं एवं विज्ञानों को अपनी मातृभाषा द्वारा आत्मसात् करके बालकों को शिक्षा देने से बालक उनको सरलता से और स्वल्प समय में अपेक्षाकृत अधिक ज्ञान को आत्मसात् कर सकता है।

संक्षेपतः शिक्षा क्षेत्र के लिए यही गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मौलिक देन है। इन्हीं आदर्शों के आधार पर इस गुरुकुल की स्थापना हुई है। हमारे राष्ट्रियशिक्षा-क्षेत्र में इन आदर्शों की एक अपरिस्फुट अनुभूति अब आरम्भ हो रही है परन्तु उसका पूर्णतः अपनाना अभी दूर की बात है।

४. संचालन तथा विधान—

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन का संचालन उत्तर प्रदेश की श्रीमती आर्य प्रतिनिधि के तत्त्वावधान में हो रहा है। श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्णतः प्रजातंत्रात्मक एवं पंजीकृत (रजिस्टर्ड) संस्था है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों तथा ग्रामों में अवस्थित लगभग १००० आर्यसमाजों के विधिवत् निर्वाचित प्रतिनिधियों से मिल कर इस सभा का संगठन होता है। विश्व-विद्यालीय विधानों में जो स्थान उनकी सिनेट अथवा कोर्ट का होता है, गुरुकुल के विधान में आर्य-प्रतिनिधि सभा का वही स्थान । इसके अतिरिक्त विश्व-विद्यालयों के विधानों के साथ गुरुकुलीय विधान की समितियों आदि की तुलना इस प्रकार की जा सकती है—

१—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा	=सिनेट अथवा कोर्ट
२—अन्तरङ्ग सभा	=एक्ज़ीक्यूटिब कौंसिल
२—विद्या सभा	=एकाडमिक कौंसिल

४—शिक्षा समिति =फ़ैकल्टी, [संकाय]
५—विषय समिति =बोर्ड आफ़ स्टडीज़

५. पदाधिकारी—

उक्त संविधान के अनुसार गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के लिए उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विश्व-विद्यालीय स्तर के निम्न पदाधिकारी निर्वाचित होते हैं—

१. कुलपति— [आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान स्वपदेन गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के कुलपति होते हैं।]

२. उपकुलपति— [विद्या सभा द्वारा भेजे गए तीन व्यक्तियों के नामों में से गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के कुलपति महोदय किसी एक को उपकुलपति मनोनीत करते हैं।]

३. मुख्याधिष्ठाता—[गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की प्रबन्ध-व्यवस्था के लिए सभा एक मुख्याधिष्ठाता (प्रोवाइस चांसलर) को नियुक्त करती है।]

४. प्रस्तोता —[रजिस्ट्रार] गुरुकुल को विद्या-सभा इनका प्रतिवर्ष चयन करती है।

५. आचार्य—ये पाँच गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के मुख्य पदाधिकारी होते हैं।

६. कार्यक्षेत्र—

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन, उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध एवं प्राचीन परन्तु अपेक्षाकृत अत्यन्त छोटे नगर वृन्दावन के समीप यमुना तट पर एकान्त में स्थित है। उसका संचालन उत्तर प्रदेश की श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा करती है। परन्तु फिर भी वह एक स्थानीय अथवा प्रदेशीय संस्था न होकर वस्तुतः एक 'अखिल-भारतीय' ख्याति एवं गौरव की संस्था है। उसका कार्य क्षेत्र बड़ा व्यापक और

सार्वदेशिक है। उसमें न केवल मथुरामण्डल अथवा व्रजमण्डल के ही विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं, अपितु उत्तर प्रदेश के सभी जिलों, और उत्तर प्रदेश से बाहर मध्य प्रदेश, बिहार, आसाम, बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्कल, मद्रास, राजस्थान, हिमाचल आदि भारत के सभी प्रदेशों से तथा भारत से बाहर बर्मा, स्याम और समुद्र पार फ़ीजो-द्वीप, अफ्रीका आदि सुदूरवर्ती देश-देशान्तरों तथा द्वीप-द्वीपान्तरों से आ आकर अनेकों विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं और कर रहे हैं। देश में दर्जनों राजकीय विश्व-विद्यालय हैं। परन्तु उनमें से विरले ही होंगे जिन्हें इतने व्यापक क्षेत्र में सेवा करने और अपने प्रवासी भाइयों के स्नेह पात्र एवं विश्वास भाजन बननें, उनकी सहायता करने का अवसर एवं सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। गुरुकुल वृन्दावन एक छोटी संस्था है। उसके साधन बहुत परिमित हैं। परन्तु उसे इतने अधिक व्यापक क्षेत्र की जनता का जो यह अटूट स्नेह और विश्वास प्राप्त हुआ है, वह उसकी अक्षय-निधि है। उस पर उसे गर्व है।

७. नामकरण और उसका आधार—

गुरुकुल, प्राचीन शिक्षा पद्धति के आदर्श पर चलने वाली संस्था है। उसके साथ जुड़ा हुआ विश्व-विद्यालय शब्द उसके क्षेत्र की व्यापकता का सूचक है। विश्व के विभिन्न भागों से अनेक छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए यहाँ आते रहते हैं इसीलिए इसे 'विश्व-विद्यालय' कहा जाता है। अब तक विश्व के अन्य देशों से गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने आने वाले छात्रों की संख्या निम्न प्रकार रही है—

१—फीजी द्वीप	१९
२—थाई देश	१४
३—पाकिस्तान सिन्ध	६
४—अफ्रीका	१

५.—डचगायना	१
६.—इंग्लैंड	२
७.—भूटान	१५
कुल योग	५८

८. लोक संवर्धना—

जैसा कि कहा जा चुका है, गुरुकुल की स्थापना विदेशीय शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्रोह करके, उसकी एक प्रतिद्वन्द्वी संस्था के रूप में की गई थी। एक ओर राजशक्ति, राजवैभव, राज-प्रभाव सभी कुछ था और दूसरी ओर था केवल राष्ट्र प्रेम। एक आदर्श और उसके साथ उपेक्षा, अपमान, अर्थाभाव और भिक्षा की झोली। यह तो "घटानां निर्मातुस्त्रिभुवनविधातुश्च कलहः" का उदाहरण था उसमें कहीं राजकीय सहायता का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। इसलिए गत आधी शताब्दी के सुदीर्घ लम्बे काल में इस गुरुकुल संस्था का संचालन राजकीय सहायता का एक भी पैसा लिए बिना केवल जनता की उदार सहायता से हुआ है। गुरुकुल के संचालकों ने विदेशी शासन काल में सदैव आर्थिक संकटों में ग्रस्त रहने पर भी सरकारी सहायता का एक भी पैसा लेने का विचार तक भी कभी नहीं किया। अपितु उसे सदैव विषवत् परित्याज्य ही माना। जिस दिन इस संस्था की स्थापना का विचार इसके संस्थापकों के मन में आया था उस समय उनके पास साधन सामग्री के नाम पर शून्य था। उनके उस पवित्र संकल्प, दृढ़ निश्चय एवं अदम्य उत्साह ने ही शून्य से इस विशाल वृक्ष की सृष्टि की थी। यह सब उस भिक्षा की झोली का प्रताप है जिसे भारत की सर्वसाधारण जनता ने सदैव अपने प्रेम से पूर्ण करते रहने का प्रयत्न किया है। पचास वर्ष के लम्बे समय तक,

सरकारी सहायता का एक भी पैसा लिए बिना लगभग ६० सहस्र वार्षिक का भारी व्यय करके जनता ने इस संस्था का संवर्धन और पोषण किया है ! इसलिए इतने लम्बे समय तक जनता का जो अटूट विश्वास, अटल स्नेह इस संस्था को प्राप्त हुआ है, वह गुरुकुल जैसी सार्वजनिक संस्था के लिए आदर एवं गौरव की वस्तु है, और उसकी विश्वसनीयता एवं लोक-प्रियता का उज्वल प्रमाण है।

९. उपाधि मान्यता—

१. गुरुकुल विश्व-विद्यालय, वृन्दावन की शिरोमणि उपाधि को उत्तर प्रदेश के प्रमुख राजकीय विश्व-विद्यालय आगरा यूनीवर्सिटी ने सन् १९४९ से तथा गोरखपुर यूनीवर्सिटी (१९५७), कानपुर (१९६८), मेरठ (१९६८) ने अपने स्थापना काल से ही बी० ए० उपाधि के समकक्ष स्वीकृत कर 'शिरोमणि' उपाधिधारी स्नातकों को हिन्दी, संस्कृत, दर्शन, राजनीति तथा अर्थशास्त्र विषयों में अपने यहाँ की एम० ए० कक्षाओं में प्रवेश की अनुमति प्रदान की।

२. इसी प्रकार देश की सबसे प्रमुख दिल्ली यूनीवर्सिटी नें ६ सितम्बर १९५६ से गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन की शिरोमणि उपाधि को अपने यहाँ वी० ए० [पास] उपाधि के समकक्ष स्वीकृत कर शिरोमणि उपाधिधारी स्नातकों को अपने यहाँ हिन्दी, संस्कृत तथा दर्शन विषयों की एम० ए० कक्षाओं में प्रविष्ट होने की सुविधा प्रदान की है।

३. उत्कल विश्व-विद्यालय, कटक (उड़ीसा) ने पत्र संख्या A/e 8013 दिनाङ्क १-६-५९ द्वारा गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को B. A. के समकक्ष स्वीकृत कर लिया है और उस्मानिया विश्व-विद्यालय हैदरावाद ने पत्र संख्या Academic/c. 131/56/8649 दिनाङ्क १२-१२-५७ द्वारा संस्कृत विषय में M. A. में प्रवेश के लिए गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को B. A, के समकक्ष स्वीकृत किया है।

४. आन्ध्र विश्व-विद्यालय ने १४ अगस्त १९५६ से गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को अपने यहां के कालिजों में नियुक्त होने वाले हिन्दी अध्यापकों के लिए निर्धारित योग्यता सूची में समाविष्ट कर लिया है।

५. उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा-परिषद् [बोर्ड आफ़ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीजिएट एजूकेशन] ने गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को अपने तत्वावधान में संचालित विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में नियुक्त, इण्टर कक्षाओं तक पढ़ाने वाले संस्कृताध्यापकों एवं हिन्दी अध्यापकों के लिए निर्धारित योग्यता-सूची में सम्मिलित कर लिया है।

६. उत्तर प्रदेश की उक्त माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने गुरुकुल को अधिकारी परीक्षा को ८-६-१९४८ से अपने यहाँ को हाईस्कूल परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्रदान की हुई है। अधिकारी परीक्षोत्तीर्ण छात्र उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ११ वीं कक्षा में अथवा इण्टर परीक्षा में प्रवेश पा सकते हैं।

७. उत्तर प्रदेश सरकार ने जी० ओ० नं० २५०३।२ बी० १३–५२ दिनांक २३ अक्टूबर १९४२ के अनुसार गुरुकुल की अधिकारी परीक्षा को नियुक्ति के लिए हाईस्कूल परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्रदान की है। इसके पूर्व यह मान्यता अस्थायी थी। उक्त तिथि से वह स्थायी हो गई है।

८. उत्तर प्रदेशीय सरकार के अनुसार भारत-सरकार ने भी गुरुकुल की अधिकारी परीक्षा को नियुक्तियों के लिए हाईस्कूल परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्रदान कर दी है।

९. उत्तर प्रदेशीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (बोर्ड आफ इण्डियन मैडीसन) ने गुरुकुल की आयुर्वेद विषयक 'आयुर्वेद-शिरोमणि' उपाधि को रस्ट्रिेशन के लिए स्वीकार किया हुआ है।

१०. उत्तर प्रदेश के बाहर मध्य प्रदेश, वम्वई, पंजाब आदि अन्य राज्यों में भी गुरुकुल की आयुर्वेद-विषयक 'आयुर्वेद-शिरोमणि' परीक्षा को मान्यता प्राप्त है।

प्रवेश-नियम

१०. प्रवेश काल—

शिक्षा का नवीन सत्र जुलाई मास में आरम्भ होता है इसलिये नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रति वर्ष जुलाई मास में ही होता है। किन्तु केवल प्रारम्भिक [तृतीय चतुर्थ] श्रेणियों में दिसम्बर मास में [गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर] भी नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश हो सकता है।

११. प्रार्थना पत्र—

गुरुकुल में प्रवेश के लिये निर्धारित प्रपत्र पर ही प्रार्थना पत्र देना होता है। प्रवेश नियम तथा निर्धारित प्रार्थना प्रपत्र की प्रतियां २५ न. पै. के टिकट भेज कर गुरुकुल कार्यालय से मंगाई जा सकती हैं।

१२. विद्यालय विभाग में प्रवेश की योग्यता—

(क)—तृतीय चतुर्थ कक्षा—८ वर्ष तक की आयु के बाहर की तृतीय कक्षा उत्तीर्ण अथवा तृतीय कक्षा तक पढ़े हुए बालक गुरुकुल की तृतीय कक्षा में, तथा बाहर की चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण बालक गुरुकुल की चतुर्थ कक्षा में प्रविष्ट होंगे।

(ख)—पञ्चम षष्ठ कक्षा—११ वर्ष तक की आयु के बाहर के पञ्चम कक्षा उत्तीर्ण बालक गुरुकुल की पञ्चम कक्षा में तथा षष्ठ कक्षा उत्तीर्ण बालक षष्ठ कक्षा में प्रविष्ट हो सकेंगे। किन्तु इन ब्रह्मचारियों के संस्कृत ज्ञान की कमी की पूर्ति के लिये विशेष व्यवस्था करनी होगी। इसके निमित्त इन ब्रह्मचारियों को एक वर्ष तक १५) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(ग) सप्तम कक्षा—१३ वर्ष तक की आयु के बाहर की सप्तम

तथा अष्टम कक्षा उत्तीर्ण ब्रह्मचारी गुरुकुल की सप्तम [विशेष] कक्षा में प्रविष्ट हो सकेंगे किन्तु इनकी संस्कृत की कमी की पूर्ति कराने के लिये दो वर्ष तक विशेष व्यवस्था की आवश्यकता होगी। इसके निमित्त इन ब्रह्मचारियों को दो वर्ष तक १५) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(घ) नवम कक्षा—१४ वर्ष तक की आयु के अंग्रेजी सहित प्रथमा अथवा अंग्रेजी रहित पूर्व मध्यम परीक्षा उत्तीर्ण ब्रह्मचारियों को गुरुकुल की नवम कक्षा में प्रविष्ट किया जा सकेगा। किन्तु इनकी धर्मशास्त्र तथा अन्य विषयों की कमी की पूर्ति के लिये एक वर्ष तक विशेष व्यवस्था करनी होगी। इसलिए इनको एक वर्ष तक १५) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

१३. महाविद्यालय विभाग में प्रवेश की योग्यता—

(क) एकादश कक्षा—संस्कृत लेकर हाईस्कूल परीक्षोत्तीर्ण अथवा अंग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष तक की आयु के [अविवाहित तथा विवाहार्थ असम्बद्ध] ब्रह्मचारी गुरुकुल की ११ वीं कक्षा में प्रविष्ट हो सकेंगे किन्तु उनकी संस्कृत धर्मशास्त्रादि विषयों की कमी की पूर्ति कराने के लिये एक वर्ष तक विशेष व्यवस्था की आवश्यकता होगी। इसके निमित्त उन्हें एक वर्ष तक २०) रुपये मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(ख) द्वादश कक्षा—संस्कृत सहित इंटरमीजिएट अथवा उत्तर-मध्यमा परीक्षोत्तीर्ण १८ वर्ष की आयु के [अविवाहित तथा विवाहार्थ असम्बद्ध] ब्रह्मचारियों को गुरुकुल की १२ वीं कक्षा में प्रविष्ट किया जा सकेगा। इन्हें भी एक वर्ष तक २०) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(ग) गुरुकुल विश्व-विद्यालय की विद्या-सभा द्वारा स्वीकृत किसी अन्य गुरुकुल के बारहवीं कक्षा तक पढ़े हुए १८ वर्ष तक की आयु के

अविवाहित तथा विवाहार्थ असंवद्ध स्नातक [या स्नातिका] गुरुकुल की १२ वीं कक्षा में प्रविष्ट हो सकेंगे। इन्हें भी एक वर्ष तक २०) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(घ) अंग्रेजी रहित शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण २० वर्ष तक की आयु के [अविवाहित तथा विवाहार्थ असम्बद्ध] छात्र नियमित ब्रह्मचारी के रूप में गुरुकुल की १२ वीं कक्षा में प्रविष्ट हो सकते हैं। इन्हें भी एक वर्ष तक २०) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(ङ) त्रयोदश कक्षा—गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत किसी अन्य गुरुकुल के २० वर्ष तक की आयु के [अविवाहित तथा विवाहार्थं असम्बद्ध] स्नातक [अथवा स्नातिका] यदि उन्होंने शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण करली हो तो गुरुकुल की १३ वीं कक्षा में प्रविष्ट हो सकते हैं। एक वर्ष तक २०) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

(च) (१) अंग्रेजी सहित शास्त्री प्रथम खण्ड परीक्षोत्तीर्ण (२) अथवा अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा उत्तीर्ण अथवा (३) इन्टर+उत्तर-मध्यमा परीक्षोत्तीर्ण २० वर्ष तक की आयु के [अविवाहित तथा विवाहार्थं असम्वद्ध] ब्रह्मचारी गुरुकुल की १३ वीं कक्षा में प्रविष्ट हो सकते हैं। एक वर्ष तक २०) मासिक विशेष व्यवस्था शुल्क देना होगा।

१४. प्रवेश व्यय—

प्रवेश के समय प्रत्येक ब्रह्मचारी को १५०) [तीन मास का शुल्क] सुरक्षा धन के रूप में, ५०) चालू मास का शुल्क तथा ४०) तख्त का मूल्य, कुल मिला कर २४०) जमा करना होता है।

१५. सुरक्षा धन की स्थिति—

इस प्रवेश-व्यय में से जो १५०) सुरक्षा धन के रूप में लिया जाता है उसकी स्थिति यह [क] यदि ब्रह्मचारी गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण किए

बिना बीच में छोड़कर चला जाता है तो यह धन 'विलीन' हो जाता है। वापिस नहीं मिलता है। [ख] यदि ब्रह्मचारी गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण कर स्नातक बनेगा तो इसमें से ५०) उसके स्नातक-वेष [गाउन] के मूल्य मध्ये काट कर शेष उसके अन्तिम शुल्क मध्ये जमा हो जायगा।

१६. प्रवेश के समय देने का सामान—

प्रवेश के समय ब्रह्मचारी के व्यवहार में आने वाले वस्त्र तथा पात्रादि की व्यवस्था निम्न प्रकार करनी चाहिए।

(क) गुरुकुल की बेष-भूषा में धोती, कुर्ता, नेकर का ही प्रयोग निर्धारित है। कोट, पैंट, पाजामा वर्जित है। अतः गुरुकुल के नियमानुसार ही वस्त्र बनवाने चाहिए।

(ख) ब्रह्मचारी के साल भर के प्रयोग के गर्मी के उपयोगी निम्न वस्त्र प्रवेश के समय दे देने चाहिए—

४ धोती, ४ कुर्ता [कुर्ते ही बनवाने चाहिए, कमीज या बुशशर्ट नहीं] ४ चादर, ४ नेकर, ४ लंगोट, ४ अंगोछा, १ दरी, १ तकिया। [वस्त्रों में २ धोती, २ कुर्ता सफेद खद्दर के होने चाहिए]।

जाड़े के लिए—१ ऊनी कुर्ता [या सूटर], १ ऊनी जवाहरबंडी १ रजाई, १ कम्बल, १ गद्दा ये वस्त्र दिवाली के पहिले अवश्य बनवा देने चाहिए।

आवश्यक पात्र भी प्रवेश के समय ही दे देना चाहिए।

वस्त्रों तथा पात्रों में समानता रखने के लिए यहां आकर ही उनके खरीदने बनवाने आदि की व्यवस्था करनी चाहिये।

१७. मासिक शुल्क—

ब्रह्मचारियों से 'शिक्षा शुल्क' नहीं लिया जाता है। किन्तु भोजनादि अन्य व्यवस्थाओं के लिए 'मासिक शुल्क' निम्न प्रकार से लिया जाता है—

प्रारम्भ से पञ्चम कक्षा तक—	५०) मासिक
षष्ठ से दशम कक्षा तक—	५५) मासिक
एकादश से चतुर्दश कक्षा तक—	६०) मासिक

घृत, दुग्ध, वस्त्र, पुस्तकादि का व्यय इसमें सम्मिलित नहीं है। उनका प्रबन्ध ब्रह्मचारी को स्वेच्छानुसार स्वयं करना होता है।

कन्याओं के लिये—कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) कन्याओं को शिक्षा के लिए गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन से सम्बद्ध संस्था है। प्रवेश योग्यता सम्बन्धी इन्हीं नियमों के अनुसार वहाँ कन्याओं का प्रवेश सम्वद्ध कक्षाओं में हो सकेगा। मासिक शुल्क के नियम उनके अलग हैं।

१८. प्रतिज्ञापत्र—

प्रवेश के समय प्रत्येक ब्रह्मचारी के संरक्षक को निम्नांकित मुद्रित प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने होते हैं—

(क) मैंने गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के नियमों को भली भांति समझ कर अपने बालक चिरंजोव ब्रह्मचारी को जिसका कि मैं पिता या संरक्षक हूँ [दोनों में अनावश्यक एक को काट दें] गुरुकुल में प्रविष्ट कराया है।

(ख) मैं घोषित करता हूँ कि मेरा यह ब्रह्मचारी इस समय अविवाहित तथा विवाहार्थ असम्बद्ध है और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक यह ब्रह्मचारी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करेगा तब तक मैं इसको अविवाहित तथा विवाहार्थ असम्वद्ध ही रखूँगा।

(ग) गुरुकुल के जो नियम अब हैं, अथवा गुरुकुल की संचालिका सभा भविष्य में उनमें जो भी संशोधन, परिवर्तन-परिवर्धन आदि करे उन सबको मैं तथा [मेरे बाद ब्रह्मचारी के शिक्षा काल के अभिभावक] मेरे उत्तराधिकारी पूर्ण रूप से पालन करेंगे।

(घ) मैं अपने इस बालक को गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण कराकर

स्नातक बनाने की भावना से ही गुरुकुल में प्रविष्ट कर रहा हूँ। इस लिए मैं ब्रह्मचारी को स्नातक बनने तक गुरुकुल में ही रखने का पूर्ण प्रयत्न करूँगा।

(ङ) मैं जानता हूं कि गुरुकुल में 'शिक्षा शुल्क' नहीं लिया जाता है। मैं केवल ब्रह्मचारी के भोजनादि व्यवस्था के लिए ही शुल्क देता हूं। उसकी शिक्षा पर जो व्यय आता है वह गुरुकुल को करना पड़ता है। मैं यत्न करूँगा कि इस कार्य में गुरुकुल की सहायतार्थ अपने प्रभाव क्षेत्र से समय-समय पर दान रूप में कुछ न कुछ धन भिजवाता रहूँ।

(च) मैं यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपने ब्रह्मचारी का मासिक शुल्क तथा अन्य जो भी देय होगा उसे नियमित रूप से प्रति मास गुरुकुल भेजता रहूँगा।

हस्ताक्षर

दिनाङ्क १९७ पता

१९. आश्रम व्यवस्था –

सभी ब्रह्मचारियों के लिए आश्रम में रहने की उत्तम व्यवस्था हैं। आश्रम-पद्धति गुरुकुल की मुख्य विशेषता है। आश्रम में ब्रह्मचारियों की हर समय देख रेख करने तथा विद्यालय के अतिरिक्त समय में उनको पठन-पाठन में सहायता पहुँचाने के लिए आश्रम में विशेष आश्रमाध्यापक या संरक्षक रहते हैं। आश्रम में रहने वाले सभी ब्रह्मचारियों को नियत दिनचर्या के अनुसार सारा कार्य करना होता है। ऋतुओं के अनुसार दिनचर्या के कार्यक्रम में एक आध घण्टे का अन्तर कर दिया जाता है परन्तु साधारण दिनचर्या निम्न प्रकार रहती है। प्रत्येक ब्रह्मचारी के लिए इस दिनचर्या का पालन करना अनिवार्य है।

२०. दिनचर्या—

१. ब्रह्म मुहूर्त में प्रातःकाल साढ़े चार बजे उठना ।
२. साढ़े पांच बजे तक शौच, दन्तधावन और स्नान से निवृत्त होना ।
३. साढ़े पांच बजे से छः बजे तक यज्ञशाला में संध्या अग्निहोत्र ।
४. छः बजे से साढ़े छः बजे तक दौड़ या अन्य व्यायाम ।
५. साढ़े छः बजे से साढ़े आठ बजे तक पाठों का स्वाध्याय करना ।
६. साढ़े आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक भोजन ।
७. पौने दस बजे तक विश्राम तथा विद्यालय की तैयारी ।
८. दस बजे से विद्यालय का पठन-पाठन प्रारम्भ ।
९. १२–४० से १–२० तक मध्यावकाश वाचनालय ।
१०. १–२० से चार बजे तक विद्यालय का कार्यक्रम ।
११. पाँच बजे तक शौच आदि से निवृत्ति तथा पुस्तकालय सम्बन्धी कार्य ।
१२. पाँच से छः बजे तक क्रीडाक्षेत्र में विविध क्रीडा ।
१३. छः बजे से साढ़े छः बजे तक सायंकालीन संध्या तथा अग्निहोत्र ।

१४. साढ़े छः से साढ़े सात बजे तक भोजन ।
१५. आठ बजे तक भ्रमण तथा विश्राम ।
१६. आठ से नौ तथा दस बजे तक स्वाध्याय ।
१७. नौ बजे छोटे ब्रह्मचारियों तथा दस बजे बड़े ब्रह्मचारियों का शयन ।

परीक्षा नियम

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की ओर से निम्नलिखित परीक्षाओं का संचालन होता है। इन परीक्षाओं में केवल गुरुकुल वृन्दावन या उसकी शाखाओं में विधिवत् शिक्षा प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी ही सम्मिलित हो सकते हैं। बाह्य छात्रों को परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं मिलती है। परीक्षाओं के नाम तथा उनके प्रत्येक खण्ड का निर्धारित शुल्क निम्न प्रकार है—

परीक्षा नाम			शुल्क
प्रवेशिका परीक्षा		[कक्षा ५–६]	४) प्रतिखण्ड
प्रथमा	,,	[कक्षा ७–८]	५) ,,
अधिकारी	,,	[कक्षा ९–१०]	१५) ,,
पण्डित	,,	[कक्षा ११–१२]	१०) ,,
शिरोमणि	,,	[कक्षा १३–१४]	१५) ,,

प्रवेशिका तथा प्रथमा परीक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था मुख्याध्यापक, तथा अधिकारी, पण्डित एवं शिरोमणि परीक्षा की व्यवस्था 'प्रस्तोता' गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के तत्त्वावधान में 'परीक्षा समिति' द्वारा की जाती है।

इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण ब्रह्मचारी तीन श्रेणियों में विभक्त होते हैं—

प्रथम श्रेणी ६०% या अधिक अङ्क होने पर

द्वितीयश्रेणी ४५% या उससे अधिक अङ्कों पर

तृतीय श्रेणी ३३% या उससे अधिक अङ्कों पर

उत्तीर्णता के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम ३३% अङ्क प्राप्त करना आवश्यक है।

इन परीक्षाओं में किस किस योग्यता के परीक्षार्थी प्रविष्ट हो सकते हैं इसका सामान्य उल्लेख प्रवेश नियमों में आ गया है। विशेष नियम आगे दिए जा रहे हैं।

२१. सम्बद्ध गुरुकुलों के स्नातकों को परीक्षा सुविधा—

'सम्बद्ध गुरुकुल' गुरुकुल शब्द से केवल उन गुरुकुलों का ग्रहण होगा जिनमें अब गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की पाठविधि तथा परीक्षाएं पूर्ण रूप से चालू हैं अन्य गुरुकुल जिनको गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन ने किसी प्रकार की मान्यता दी है वे 'स्वीकृत' या 'मान्यता प्राप्त' गुरुकुल कहलाते हैं। 'सम्बद्ध गुरुकुल' एवं 'स्वीकृत गुरुकुल' शब्दों का यह अर्थ भेद इस प्रसंग में ध्यान में रखना चाहिए।

(क) गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के साथ सम्बद्ध गुरुकुलों के पूर्व स्नातकों (तथा स्नातिकाओं) को, यदि उन्होंने शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण करली हो तो गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की शिरोमणि कक्षा के प्रथम खण्ड (कक्षा १३) की परीक्षा में स्वाध्यायी छात्र के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है।

(ख) सम्बद्ध गुरुकुलों के उन पूर्व स्नातकों (तथा स्नातिकाओं) को जिन्होंने शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की है गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की पण्डित परीक्षा के द्वितीय खण्ड (कक्षा १२) की परीक्षा में स्वाध्यायी छात्र के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है।

२२. गुरुकुलों के अध्यापकों को परीक्षा सुविधा—

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन, तथा उससे 'सम्बद्ध' अथवा 'मान्यता प्राप्त' स्वीकृत' गुरुकुलों के उन अध्यापकों (तथा अध्यापि-

काओं) को जिन्होंने शास्त्री परीक्षा अथवा किसी विश्व-विद्यालय की बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करली है और गुरुकुल में अध्यापन कार्य करते हुए एक वर्ष से अधिक समय हो गया हो। स्वाध्यायी छात्र के रूप में शिरोमणि परीक्षा के प्रथम खण्ड (कक्षा १३) की परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है।

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन तथा उससे सम्बद्ध अथवा स्वीकृत गुरुकुलों के उन अध्यापकों (तथा अध्यापिकाओं) को जिन्होंने उत्तरमध्यमा या इण्टरमीजिएट परीक्षा उत्तीर्ण करली हो और जिनको गुरुकुल में अध्यापन कार्य करते हुए एक वर्ष का समय हो गया हो गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की पण्डित परीक्षा के द्वितीय खण्ड [कक्षा १२] की परीक्षा में 'स्वाध्यायी छात्र' के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है।

२३. अन्य शिक्षा संस्थाओं के अध्यापकों को सुविधा—

(क) प्रशासन द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थाओं के उन अध्यापकों [तथा अध्यापिकाओं] को जिन्होंने शास्त्री अथवा बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करली हो और शिक्षा सस्थाओं में कार्य करते एक वर्ष का समय हो चुका हो, शिरोमणि परीक्षा के प्रथम खण्ड [कक्षा १३] की परीक्षा में, 'स्वाध्यायी छात्र' के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है।

(ख) प्रशासन द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थाओं के उन [अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं] को जिन्होंने उत्तर मध्यमा अथवा इन्टरमीजिएट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और जिन्हें शिक्षा संस्थाओं में कार्य करते हुए एक वर्ष का समय हो चुका है गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की पण्डित परीक्षा के द्वितीय खण्ड [कक्षा १२] की परीक्षा में स्वाध्यायी छात्र के रूप में सम्मिलित होने की अनुमति दी जा सकती है।

२४. स्वाध्यायी छात्रों के लिए अनुमति की प्रक्रिया—

उपर्युक्त २१, २२, २३ धाराओं के अन्तर्गत जिन स्नातकों [तथा स्नातिकाओं] अथवा अध्यापकों [तथा अध्यापिकाओं] आदि को स्वाध्यायी छात्र के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति का विधान किया गया है उनको इस प्रकार की अनुमति प्राप्त करने के लिए निम्न प्रक्रिया का अवलम्बन करना चाहिए—

(क) उन्हें प्रतिवर्ष १५ अगस्त तक इस प्रकार की अनुमति प्राप्त करने के लिए निर्धारित प्रपत्र पर प्रार्थना पत्र भेजना चाहिए। प्रपत्र की प्रति २५ न. पै. के टिकट भेजकर मँगाई जा सकती है।

(ख) नियत परीक्षा शुल्क तथा १०) अतिरिक्त प्रार्थना पत्र शुल्क प्रार्थना पत्र के साथ ही प्रस्तोता के कार्यालय में 'धनादेश' द्वारा भेज देना चाहिए।

(ग) अपनी पूर्व उत्तीर्ण की हुई उन परीक्षाओं के जिनके आधार पर गुरुकुल की परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति प्राप्त करना चाहते हैं प्रमाणपत्रों की प्रमाणित यथार्थ प्रतिलिपियाँ साथ में अवश्य भेजनी चाहिए।

(घ) धारा २१ (क) (ख) में वर्णित स्नातकों तथा स्नातिकाओं को अपने स्नातक परीक्षा के प्रमाणपत्र की तथा शास्त्री परीक्षा के प्रमाणपत्र की 'सत्य-प्रतिलिपि' जिस गुरुकुल संस्था के स्नातक हैं उसके आचार्य के द्वारा प्रमाणित करवाकर भेजनी चाहिए।

(ङ) धारा २१ तथा २२ (क) (ख) में वर्णित अध्यापकों (तथा अध्यापिकाओं) को उन परीक्षाओं के उत्तीर्ण करने के जिनके आधार पर वे गुरुकुल विश्वविद्यालय की परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति प्राप्त करना चाहते हैं प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपि अपनी शिक्षा संस्था के प्रधानाचार्य द्वारा प्रमाणित करवाकर भेजना चाहिए।

(च) धारा २२-२३ में वर्णित अध्यापकों (तथा अध्यापिकाओं)

को अपने प्रार्थनापत्र अपनी संस्था के प्रधानाचार्य के द्वारा ही भेजनें चाहिए ।

(छ) स्वाध्यायी छात्रों के प्रार्थनापत्र निर्धारित परीक्षा शुल्क+ १०) अतिरिक्त प्रार्थनापत्र शुल्क के साथ १५ अगस्त तक प्रस्तोता के कार्यालय में आ जाने चाहिए। १५ अगस्त के बाद १५ अक्टूबर तक १५) बिलम्ब शुल्क देकर भी प्रार्थनापत्र भेजे जा सकते हैं ।

(ज) इन प्रार्थनापत्रों की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति की सूचना अक्टूबर के अन्त में परीक्षार्थी के पास भेजी जायगी। जिसका प्रार्थनापत्र अस्वीकृत होगा उसका (प्रार्थनापत्र शुल्क और बिलम्ब शुल्क काटकर) केवल परीक्षा शुल्क वापिस कर दिया जायगा। अस्वीकृत प्रार्थनापत्रों को अस्वीकृति कारण बतलाना आवश्यक नहीं होगा ।

(झ) गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने वाले इन स्वाध्यायी छात्रों के प्रमाणपत्र नियमित ब्रह्मचारियों के प्रमाणपत्रों से भिन्न प्रकार के होंगे। उनमें 'स्वाध्यायी छात्र' के रूप में परीक्षा उत्तीर्ण करने का उल्लेख होगा ।

२५. स्वाध्यायी छात्रों के परीक्षा केन्द्र—

स्वाध्यायी छात्र के रूप में प्रविष्ट होने वाले पुरुष छात्रों को गुरुकुल वृन्दावन केन्द्र में तथा स्त्री छात्राओं को 'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) केन्द्र में ही परीक्षा देनें के लिए आना होगा ।

२६. उपाधि वितरण व्यवस्था—

(क) उत्तीर्ण स्वाध्यायी छात्रों का भी गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के दीक्षान्त एवं उपाधि वितरण समारोह के समय उपस्थित होना आवश्यक है। जो स्वाध्यायी छात्र किसी कारण से उपाधि

वितरण समारोह में सम्मिलित न हो सकें, वे १२) शुल्क तथा २) रजिस्ट्री व्यय भेजकर अपना प्रमाणपत्र डाक द्वारा मँगवा सकेंगे।

(ख) स्वाध्यायी छात्रों के रूप में शिरोमणि परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अन्य गुरुकुलों के स्नातकों तथा अध्यापकों को उपाधि वितरण समारोह के अवसर पर विश्व-विद्यालय का नियत 'स्नातक वेष (गाउन) प्रदान किया जा सकता है। उसका मूल्य ५०) है।

(ग) जो अपने लिए गाउन को बनवाना चाहें, उन्हें परीक्षा परिणाम की सूचना प्राप्त होते ही उसका मूल्य ५०) 'धनादेश' द्वारा गुरुकुल कार्यालय में भेज देना चाहिए। 'धनादेश' भेजते समय उस पर स्पष्ट रूप से यह लिख देना चाहिए कि यह धन 'स्नातक वेष' (गाउन) के मूल्य रूप से भेजा जा रहा है। इससे मेरे लिए गाउन बनवा दिया जाय।

(घ) जो अपने लिए अलग से 'स्नातक वेष' (गाउन) न बनवाना चाहें उन्हें उपाधि वितरण समारोह में सम्मिलित होने के लिए २) शुल्क देने पर उतनी देर के लिए 'स्नातक वेष' मिल सकेगा। किन्तु शुल्क पर लेते समय भी उन्हें पूरा मूल्य ५०) जमा करना होगा। उसको लौटाने पर २) शुल्क का काटकर शेष ४८) वापिस मिल जायगा। स्नातक वेष (गाउन) को एक दिन से अधिक अपने पास रखने पर प्रतिदिन (अथवा उसके भाग पर) २) शुल्क लग जायगा। गाउन के फट जाने या खराब हो जाने की दशा में उसे वापिस नहीं लिया जायगा। और न उसका मूल्य वापिस किया जायगा।

(ङ) कन्याओं का दीक्षान्त एवं उपाधि वितरण समारोह गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के साथ सम्बद्ध कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर कन्या गुरुकुल में होगा। स्वाध्यायिनी परीक्षार्थिनियों से रूप में शिरोमणि-परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली स्नातिकाओं तथा अध्यापिकाओं को उसी जगह उपाधि वितरण समारोह में सम्मिलित होना होगा।

२७. स्नातकोत्तर परीक्षा—

गुरुकुल की शिक्षा 'विद्याभ्यास' तथा 'व्रताभ्यास' नामक दो विभागों में विभक्त है। 'विद्याभ्यास' के लिए मुख्यतः विद्यालय, महाविद्यालय में तथा 'व्रताभ्यास के लिए मुख्यतः आश्रम विभाग में व्यवस्था की जाती है। गुरुकुल में प्रविष्ट होने वाला प्रत्येक ब्रह्मचारी इन दोनों विभागों में सफलता प्राप्त कर 'विद्याव्रत-स्नातक' बनता है। 'शिरोमणि' परीक्षा पर्यन्त विद्या तथा व्रत का अभ्यास करके अन्तिम शिरोमणि परीक्षा में विधिवत सफल हो जाने पर उसका 'समावर्तन संस्कार' हो जाता है और इस प्रकार वह स्नातक बनकर ब्रह्मचर्याश्रम के वन्धनों से मुक्त हो जाता है। उसके वाद भी वह चाहे तो यहाँ रहकर स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

स्नातकोत्तर परीक्षाओं के नाम तथा उनका शुल्क निम्न प्रकार है—

परीक्षा नाम		शुल्क
दीक्षित परीक्षा	(एल० टी०)	२५)
आचार्य	(एम० ए०)	२५)
वाचस्पति	(पी. एच. डी.)	५०)

स्नातकोत्तर परीक्षा में गुरुकुल विश्व-विद्यालय के स्नातकों के अतिरिक्त अन्य राजकीय विश्व-विद्यालयों के एम० ए० परीक्षोत्तीर्ण छात्र भी स्वाध्यायी (प्राइवेट) छात्रों के रूप में प्रविष्ट हो सकते हैं।

२८. अन्य शुल्क—

प्रमाणपत्र-प्रतिलिपि शुल्क (पांच वर्ष तक प्रमाण पत्रार्थ)	५)
प्रमाणपत्र-प्रतिलिपि शुल्क (पांच वर्ष से पुराने के लिए)	१०)
विश्व-विद्यालय-परिवर्तन-प्रमाणपत्र (माइग्रेशन सार्टी०)	१०)
विद्यालय-परिवृत्ति-प्रमाणपत्र (टी० सी०) शुल्क	४)

वाचस्पति उपाधि के नियम

'वाचस्पति' उपाधि गुरुकुल विश्व-विद्यालय की सर्वोच्च उपाधि है। किसी अपूर्व, महत्वपूर्ण 'रचना' पर ही दी जा सकती है। इस उपाधि प्राप्ति के लिए प्रार्थी में निम्न योग्यता होना आवश्यक है:—

(क) गुरुकुल विश्व-विद्यालयकी 'आचार्य' परीक्षोत्तीर्ण करने के कम से कम तीन वर्ष बाद प्रार्थी हो सकते हैं।

(ख) गुरुकुल विश्व-विद्यालय की 'शिरोमणि' परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण स्नातक कम से कम पांच वर्ष बाद प्रार्थी हो सकते है।

(ग) किसी राजकीय विश्व-विद्यालय की एम. ए. अथवा आचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के कम से कम पांच वर्ष बाद इस उपाधि के लिए प्रार्थी हो सकते हैं।

२—प्रार्थी संस्कृत अथवा हिन्दी अथवा किसी विदेशी भाषा में लिखी हुई अपनी महत्वपूर्ण रचना को विचारार्थ भेज सकते हैं।

३—मुद्रित ग्रन्थ की पांच प्रतियाँ तथा अमुद्रित ग्रन्थ की टाइप की हुई और जिल्द बँधी हुई तीन प्रतियां भेजी जा सकती हैं। हस्तलिखित प्रति विचारार्थ स्वीकार न की जावेगी।

४—वाचस्पति परीक्षा का शुल्क २५०) है जो विचारार्थं भेजी गई पुस्तकों के साथ अवश्य भेज देना चाहिये। उसके प्राप्त हुए बिना ग्रन्थों पर विचार न हो सकेगा।

५—शुल्क तथा पुस्तक दोनों प्रस्तोता के कार्यालय में प्राप्त हो जाने पर प्रस्तोता उक्त विषय के अनुरूप छः योग्य विद्वानों के नाम परीक्षकत्व के कार्य के लिए शिक्षा समिति के समक्ष प्रस्तुत करेंगे जिनमें से शिक्षा समिति किन्हीं तीन को परीक्षक मनोनीत करेगी।

६—(क) ग्रन्थ तीनों परीक्षकों के पास सम्मत्यर्थ भेजा जायगा। यदि तीनों परीक्षकों ने सर्व सम्मति से ग्रन्थ को 'असाधारण महत्व' की रचना ठहराया तो वह उपाधि प्रदान के योग्य समझा जायगा।

(ख) यदि दो परीक्षकों ने उसे उपाधि के अयोग्य ठहरा दिया तो वह अन्तिम रूप से अस्वीकृत कर दिया जायगा।

७—परीक्षकों की सम्मति सहित शिक्षा समिति का परामर्श प्राप्त होने पर विद्या सभा इसके विषय में अन्तिम निश्चय करेगी।

८—विद्या सभा द्वारा उपाधि प्रदान करने का निश्चय होने पर गुरुकुल विश्व-विद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर यह उपाधि प्रदान की जावेगी।

❀ वार्षिक अनध्याय सूची ❀

निम्नलिखित पर्वों पर विद्यालय महाविद्यालय में अनध्याय रहेगा :—

१—विक्रमाब्द, दयानन्दाब्द तथा आर्यसमाज-स्थापना दिवस	१ दिन चैत्र शुक्ला १
२—रामनवमी	१ दिन चैत्र शु० ९
३—श्रावण मेला प्रचार	१ दिन श्रावण शु० ११
४—स्वतन्त्रता दिवस	१ दिन १५ अगस्त
५—श्रावणी	३ दिन श्रावण शु० १४, १५ तथा श्रावण कृ० १
६—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२ दिन भाद्रपद कृ० ८, ९
७—गान्धी जयन्ती	१ दिन २ अक्टूबर
८—विजया दशमी	५ दिन आश्विन शु० ९ से १४
९—गुरुकुल स्थापना दिवस	१ दिन ,, ,, १०
१०—दीपावली	३ दिन कार्तिक कृ० ३० तथा कार्तिक शु० १, २
११—विद्यापरिषज्जन्मदिवस	१ दिन मार्गशीर्ष कृ० १
१२—गुरुकुल महोत्सव	११ दिन २० से ३१ दिसम्बर
१३—आर्य प्रतिनिधि सभा का स्थापना दिवस	१ दिन २७ दिसम्बर
१४—गणतन्त्र दिवस	१ दिन २६ जनवरी
१५—बसन्त पञ्चमी	१ दिन माघ शु० ५
१६—ऋषिबोधोत्सव-शिवरात्रि	१ दिन फाल्गुन कृ० १४

१७—वीर तृतीया [लेखराम दिवस]	१ दिन ,, शु० ३
१८—होलिकोत्सव	४ दिन फा० शु० १४, १५ तथा चैत्र कृ० १, २
१९—ब्रह्मोत्सव-रथमेला-प्रचार	२ दिन चैत्र कृ० ९, १०
२०—साप्ताहिक अनध्याय	४ प्रतिमास—२ अष्टमी १ पूर्णिमा तथा १ अमावस्या
२१—ग्रीष्मावकाश	२० मई से ३० जून तक

पाठ-विधि

बाल-कक्षा भाग (१)

१. आर्य भाषा:—१. बेसिक रीडर द्वितीय भाग — १०० अंक
२. मात्रा-ज्ञान, संयुक्ताक्षर-ज्ञान, सुलेख

२. गणित— बेसिक अंकगणित प्रथम भाग — १०० अंक
गिनती १०० तक, पहाड़े दस तक याद करना तथा लिखना। जोड़-बाकी, इकाई का गुणा।

३. धर्म शिक्षा साधारण-ज्ञान—प्रार्थना-मंत्र, संध्या-मन्त्रों का कण्ठ करना, गुरुकुल का भूगोल, दिशा-ज्ञान। — १०० अंक

भाग २

१. आर्य भाषा—बेसिक रीडर तृतीय भाग सुलेख, श्रुत-लेख। — १०० अंक

२. गणित— जोड़ बाकी, गुणा, भाग बेसिक अंकगणित भाग २, २० तक पहाड़े कण्ठ करना तथा लिखना। — १०० अंक

३. धर्म शिक्षा साधारण-ज्ञान—प्रार्थना-मंत्र, सन्ध्या तथा हवन मंत्रों का कण्ठ करना। — १०० अंक

गुरुकुल का भूगोल, दिशाओं का ज्ञान, रामकृष्ण और ऋषि-दयानन्द की किन्हीं दो जीवन-घटनाओं का ज्ञान।

तृतीय कक्षा

१. संस्कृत	१०० अङ्क
१. संस्कृत सुधा प्र० भा० १–८ पाठ तक अथवा संस्कृत शिक्षा सोपानम् १–८ पाठ	६०
२. पुस्तकान्तर्गत शब्द रूप, धातु रूप कण्ठस्थ करना	२०
३. दस श्लोक कण्ठस्थ करना	१०
४. अनुवाद	१०
२. धर्म शिक्षा	१०० अङ्क
१. सन्ध्या हवन कण्ठस्थ करना	७०
२. प्रार्थना, जागरण, शयन, राष्ट्रमन्त्र, परिषद् मन्त्र, कण्ठस्थ करना।	३०
३. आर्य भाषा	१०० अङ्क
१. बेसिक रीडर चतुर्थ भाग	६०
२. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, प्रकृति-प्रत्यय का ज्ञान।	२०
३. सुलेख, श्रुतांकन	२०
४. गणित	१०० अङ्क
१. बेसिक अंकगणित भाग ३	७०
२. पहाड़ा २० तक और दशमलव सिक्कों का ज्ञान	३०
५. साधारण ज्ञान	१०० अङ्क
१. भूगोल परिभाषा	५०
२. बेसिक इतिहास	५०

चतुर्थ कक्षा

१. संस्कृत	१०० अङ्क
१. संस्कृत सुधा प्र० भाग अथवा संस्कृत शिक्षा सोपानम् सम्पूर्ण (साभ्यास)	६०

२. पुस्तकान्तर्गत शब्द रूप एवं धातु रूप	२०
३. १५ श्लोक कण्ठस्थ करना	१०
४. अनुवाद	१०
२. धर्म शिक्षा	**१०० अङ्क**
१. सन्ध्या हवन एवं प्रार्थनादि मन्त्रों की आवृत्ति	६०
२. स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण (शुद्धोच्चारण) (कर्तव्य दर्पण से)	२५
३. आर्य समाज के दस नियम कण्ठस्थ करना	१५
३. आर्य भाषा	**१०० अङ्क**
१. बेसिक रीडर भाग ५	६०
२. हिन्दी व्याकरण (१० पद्य कण्ठस्थ करना)	२०
३. सुलेख तथा श्रुतांकन	२०
४. गणित	**१०० अङ्क**
१. बेसिक अंकगणित भाग ४	१००
५. साधारण ज्ञान	**१०० अङ्क**
१. मथुरा जिले का भूगोल	५०
२. बेसिक इतिहास भाग २	५०

पंचम कक्षा

१. व्याकरण	**१०० अङ्क**
१. अष्टाध्यायी प्र० अध्या०	६०
२. अनुवाद चन्द्रिका पूर्वार्द्ध का प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी १—१५ पाठ	४०
२. संस्कृत	**१०० अङ्क**
संस्कृत सुधा द्वितीय भाग (साभ्यास)	६०
२. शब्द रूप-प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी के आधार पर।	२०
३. पुस्तकान्तर्गत श्लोकों का कण्ठस्थीकरण	२०

३. धर्म शिक्षा — १०० अङ्क

१. आठ प्रार्थना मन्त्रों के अर्थ — ३०

२. सन्ध्या हवन के मन्त्रों का शुद्ध लेखन, आवृत्ति। कर्तव्य दर्पण के आधार पर) — ३०

३. व्यवहारभानु — ४०

४. आर्य भाषा — १०० अङ्क

प्रथम पत्र १. नव भारती प्र० भाग (पुस्तक के पद्यों का कण्ठस्थीकरण) — ७०

द्वितीय पत्र २. हिन्दी व्याकरण प्र० भाग — १०

३. अदृष्ट, पत्र लेखन, निबन्ध रचना — २०

५. गणित — १०० अङ्क

१. बेसिक अंकगणित भाग ५ — १००

२. दशमलव विधि जोड़ बाकी

६. साधारण ज्ञान — १०० अङ्क

प्रथम पत्र १. उत्तर प्रदेश का भूगोल — ५०

द्वितीय पत्र २. हमारे पूर्वज भाग ३ — ४०

३. भारतीय त्यौहारों का परिचय — १०

षष्ठ कक्षा

१. व्याकरण — १०० अङ्क

१. अष्टाध्यायी — ३०

२. लघुसिद्धान्त कौमुदी (पंच संधि पर्यंत) अथवा वेदांग प्रकाश (सन्धि विषय) — ७०

२. संस्कृत साहित्य — १०० अङ्क

प्रथम पत्र १. संस्कृत सुधा ३ भाग साभ्यास — ७०

द्वितीय पत्र २. अनुवाद (अनुवाद चन्द्रिका का प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी उत्तरा०) — ३०

३. धर्म शिक्षा — १०० अंक
- १. आर्योद्देश्य रत्नमाला ५० रत्न
- २. पंच महायज्ञ विधि (सामान्य ज्ञान)
- ३. सन्ध्या मन्त्रों के अर्थ

४. आर्य भाषा — १०० अंक
- प्रथम पत्र १. नव भारती तृतीय भाग — ७०
- द्वितीय पत्र २. हिन्दी सरस्वती व्याकरण II (१–८ अध्याय) — ३०
- ३. निवन्ध अदृष्ट एवं पत्र रचना।

५: गणित — १०० अंक
- प्रथम पत्र १. अंकगणित (प्र० भा०) — ५०
- द्वितीय पत्र २. बीज गणित रेखागणित प्र० भा० — ५०

६. साधारण ज्ञान — १०० अंक
- प्रथम पत्र १. बाल भूगोल प्र० भा० — ५०
- द्वितीय पत्र २. हमारा इतिहास भाग १ — ५०
- ३. नागरिक जीवन
- ४. ऋषि दयानन्द का जीवन (उत्तरार्द्ध)

७. **English** — १०० अंक
- प्र० प० 1. New Plan English Reader I — 70
- 2. Parts of speech in brief (of Simple Words) — 15
- 3. Translation — 15

सप्तम कक्षा

१. संस्कृत व्याकरण — १०० अंक
- १. अष्टाध्यायी चतुर्थ अध्याय — ३०
- २. लघु सिद्धान्त कौमुदी (प्रारम्भ से अव्ययान्त) अथवा वेदांग प्रकाश (नामिक) — ७०

२. संस्कृत साहित्य	१०० अंक
प्र० पत्र—१. संस्कृत विहार (साभ्यास)	७०
द्वि० पत्र—२. अनुवाद (रचनानुवाद कौमुदी १–१५)	२०
३. छन्द-अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्र-वज्रा, उपजाति, वंशस्थ, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरणी, शार्दूलविक्रीडित।	१०
३. धर्म शिक्षा	१०० अंक
१. सत्यार्थ प्रकाश १, २, ३ समुल्लास (तृतीय समुल्लास का दर्शन प्रकरण छोड़कर)	
४. आर्य भाषा	१०० अंक
प्र० पत्र—१. गद्य-प्रभा पूर्वार्द्ध	३५
२. हिन्दी साहित्य सरोवर पूर्वार्द्ध	३५
द्वि० पत्र—सरस्वती व्याकरण	६–११ अ० १०
निबन्ध, अपठित, पत्र लेखन	२०
५. गणित	१०० अंक
प्र० पत्र०—१. अंकगणित भाग २	५०
द्वि० पत्र—२. रेखागणित भाग [२ क० ७]	२५
३. बीजगणित भाग [२ क० ७]	२५
६. साधारण ज्ञान	१०० अंक
१. बाल भूगोल भाग २	५०
२. हमारा इतिहास भाग २ नागरिक जीवन	५०
७. अंग्रेजी	१०० अंक
1. New Plan English Reader II	70
2. Parts of Speech in detail	15
3. Translation, Simple letter writting	15

८. विज्ञान — १०० अंक

१. नवीन प्रारम्भिक विज्ञान भाग २

अष्टम कक्षा

१. संस्कृत व्याकरण	१०० अंक
१. अष्टाध्यायी ५ वां अध्याय	३०
२. लघु सिद्धान्तकौमुदी तिङन्त	७०
२. संस्कृत साहित्य	१०० अंक
प्र० पत्र—देव वाणी परिचायिका [साभ्यास]	७०
द्वि० पत्र—२. अलंकार—अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टान्त, श्लेष, व्यतिरेक।	१०
३. अनुवाद एवं निबन्ध रचनानुवाद कौमुदी १६–३० अभ्यास तक	२०
३. धर्म शिक्षा	१०० अंक
१. सत्यार्थ प्रकाश [४. केवल वर्णव्यवस्था विषय तथा ५, ६ समुल्लास]	
४. आर्य भाषा	१०० अंक
प्र० पत्र—१. गद्यप्रभा उत्तरार्द्ध	३५
२. हिन्दी साहित्य सरोवर उत्त०	३५
द्वि० पत्र—१. सरस्वती व्याकरण १२–१६ अ०	१०
२. निबन्ध एवं अदृष्ट	२०
५. गणित	१०० अंक
प्र० पत्र—१. अंकगणित भा० ३	५०
द्वि० पत्र—२. रेखागणित भाग ३ [कक्षा ८]	२५
३. बीजगणित भाग ३ [कक्षा ८]	२५

६. साधारण ज्ञान — १०० अंक

प्र० पत्र—१. बाल भूगोल भाग ३ — ५०

द्वि० पत्र २. हमारा इतिहास भाग ३ तथा नागरिक जीवन — ५०

७. अंग्रेजी — १०० अंक

प्र० पत्र—1. New Plan English Reader III — 70

द्वि० पत्र—2. Analysis, Active voice, Passive voice, Direct-Indirect, Parts of speech and Translation. — 30

८. विज्ञान — १०० अंक

१. नवीन प्रारम्भिक विज्ञान भा० ३

अधिकार-परीक्षा प्रथम वर्ष

[अनिवार्य विषय]

संस्कृत व्याकरण — १०० अंक

१. अष्टाध्यायी षष्ठ अध्याय — २०

२. मध्य सिद्धान्त कौमुदी, कारक तथा समास — ८०

[कारक तथा समास का व्यावहारिक प्रयोग भी पृष्टव्य]

२. संस्कृत साहित्य — १०० अंक

प्र० पत्र—१. शिवराज विजय १–२ निश्वास — २५ अंक

२. रघुवंश २–५ सर्ग — २५

द्वि० पत्र—३. काव्य दीपिका पूवार्द्ध — २५

४. संस्कृत अनुवाद एवं निबन्ध — २५

[रचनानुवाद कौमुदी]

३. धर्मशास्त्र — १०० अंक

१. सत्यार्थ प्रकाश ७, ८, ९, समुल्लास — ५०

२. मनुस्मृति १-२ अध्याय — २५
३. ईशोपनिषद्—म० नारायण स्वामी — २५

४. आर्य भाषा — १०० अंक

प्र० पत्र—१. गद्य पारिजात पूर्वार्द्ध — २५
२. कल्लोलिनी पूर्वार्द्ध — २५
द्वि० पत्र—३. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास पू०
[गुलाबराय] — १५
४. निबंध — २०
५. छन्द—दोहा, चौपाई, छप्पय, सोरठा, कुंडलियां, हरिगीतिका, वरवै, कवित्त, सवैया। इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवजा, वंशस्थ, उपजाति, वसन्ततिलका, मत्तगयन्द द्रुतविलम्वित। — १५

५. गणित — १०० अंक

प्र० पत्र—१. सरल हाईस्कूल अंकगणित डा० मनोहर रे — २५
[सांख्यिकी सहित अंकगणित मात्र]
२. सरल हाईस्कूल बीजगणित डा० मनोहर रे
[त्रिकोणमिति सहित, त्रिकोणमिति मात्र] — २५
द्वि० पत्र—३. नवीन रेखागणित परिचय
[ले० पी० एन० घोषाल, ठोस ज्यामिति सहित]
प्रमेय १-२१ तक, निर्मेय १-६ तक — ४०
४. ठोस ज्यामिति [समानान्तर षडफलक] — १०

-अथवा

[केवल कन्याओं के लिए गणित के विकल्प में]

६. गृह विज्ञान एवं गृह कला १०० अंक

[इस पाठ्यक्रम में से आधा अंश अधिकारी के प्रथम वर्ष में शेष द्वितीय वर्ष में निर्धारित रहेगा।]

प्रथम पत्र ३५

शरीर—मानव अस्थि पंजर का प्रारम्भिक ज्ञान, पाचन, परि-संचरण, श्वसन व उत्सर्जन।

स्वास्थ्य रक्षा, व्यक्तिगत स्वास्थ्य रक्षा, वायु, जल, अन्न।

व्याधियों से सतर्कता—संक्रामक रोग, चेचक, माता, खसरा, जुकाम, इन्फ्लुएन्जा तथा क्षयरोग, ज्वर, पेचिस, अतिसार, हैजा, प्लेग, मलेरिया, खुजली, कुष्ठ, नेत्ररोग, छाजन, दाद, दन्त रोग, कर्ण रोगों का परिचय।

द्वितीय पत्र ३५

गृह प्रबन्ध—(क) घर का चुनाव, फर्नीचर तथा सजावट, कमरों का वितरण, घर तथा फर्नीचर की सफाई तथा सुरक्षा, कूड़ा करकट तथा वाहित मलों का विसर्जन, मक्खी-मच्छरों से सतर्कता, गृहणी के कर्तव्य।

(ख) पाक कक्ष की सुरक्षा, पाक कक्ष की सामग्री की व्यवस्था तथा आयोजन।

आर्थिक स्वास्थ्य संबन्धी व आहारों के परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए भोजन बनाना।

(ग) कपड़ा काटना तथा सिलना विभिन्न प्रकार के कपड़ों का ज्ञान, उनके संकुचन का ज्ञान, उचित रंग तथा परिमाण को ध्यान में रखते हुए सामग्री का चुनाव, निश्चित नाम के वस्त्र के लिए कपड़े का आकलन।

प्रयोगात्मक

१. प्राथमिक चिकित्सा तथा गृह परिचर्या — ३०

गृह परिचर्या की परिभाषा।
रोगी का स्थान, स्पंज, दूध, भोजन, बोतल का प्रयोग।
शिशु का पोषण तथा कुपोषण।
प्राकृतिक तथा कृत्रिम श्वास।
साधारण विष के विषनाशक तथा सर्प दंश का उपचार।
घायल को ले आने के साधन।

२. सिलाई

मनुष्य के लिए पाजामा।
स्त्री के लिए ब्लाउज या पेटीकोट।
साधारण फैंसी टांके।
बच्चे के वस्त्र।

३. धुलाई

४. पाककला।

संस्तुत पुस्तकें

१. गृह विज्ञान भाग १—ले० आर० डी० विद्यार्थी।
२. गृह विज्ञान भाग २—ले० आर० डी० विद्यार्थी।

३. इंगलिश — १०० अंक

प्र० पत्र—1. Prose for High School. (1–6)
P. N. Agarwal — 50
2. Poems for the young. S. B. Singh (1–8)
3. Argosy Book of India. S. C. Bhattacharya (1–3) — 50

4. Grammar & Composition. 50

(A) Tenses, voice & sequenecy of tenses and appropriate prepositions.

(B) Transformation of sentences including syuthesis change of words. Phrases of clauses.

(C) Analysis Narration

(D) Translation.

अधिकारी परीक्षा, द्वितीय वर्ष

अनिवार्य विषय

१. संस्कृत-व्याकरण	१००
१. अष्टाध्यायी—७-८ अध्याय	२०
२. मध्य सिद्धान्त-कौमुदी (कृदन्त, तद्धित, स्त्री प्रत्यय)	८०
२. संस्कृत-साहित्य	१००
प्र० पत्र—१. किरातार्जुनीयम् १-२ सर्ग	२५
२. स्वप्नवासवदत्तम्	२५
द्वि० पत्र—३. काव्य दीपिका—उत्तरार्द्ध	२५
४. रचनानुवाद-कौमुदी (४६-६०) अनुवाद एवं निबन्ध	२५
३. धर्म शिक्षा	१००
१. सत्यार्थ-प्रकाश १०-११ समुल्लास	५०
२. केनोपनिषद्	२५
३. संक्षिप्त मनुस्मृति अध्याय-४	२५
४. आर्य भाषा	१०० अंक
प्र० पत्र—१. गद्य-पारिजात उत्तरार्द्ध	३० ,,
२. कल्लोलिनी ,,	३० ,,

द्वि० पत्र—३. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास [गुलाबराय] १५
४. निबन्ध १५
५. अलंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, अनन्वय, अपन्हुति, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, उल्लेख, भ्रान्तिमान, सन्देह। १०

५. गणित १००

प्र० पत्र—१. सरल हाईस्कूल अंकगणित (सांख्यिकी सहित) डा० मनोहर रे (सांख्यिकीय भाग) १५
२. हाईस्कूल बीजगणित (त्रिकोणमिति-सहित) डा० मनोहर रे (बीजगणित भाग) ३५
द्वि० पत्र—३. नवीन रेखागणित परिचय ३०
(ठोस ज्यामिति सहित)
द्वारा—पी० एन० घोषाल
(प्रमेय—२२-३० पर्यन्त, निर्मेय—६१-६
४. ठोस ज्यामिति २०
(समान्तर षड्फलक को छोड़कर सम्पूर्ण)

६. गृह विज्ञान १००

(केवल कन्याओं के लिए गणित के विकल्प में)
पाठ्यक्रम पहले दिया जा चुका है। ३६-३७

७. अंग्रेजी १००

I paper (1) Prose for High School (P. N. Agrawal) 20
[Rest lessions]
(2) Poems for the young (S. B. Singh) (Last seven poems) 20

(3) Argosy book of India (Bhattacharaya)
(Last three lessons) 10

II paper—Translation 15
Unseen 10
Essay 15
Voice, Narration, Analysis, Transformation etc. 10

Note—The course of Adhikari is according to the course prescribed by the Board of High Shool and Intermediate Education U. P.

ऐच्छिक विषय—निम्नखिखित में से एक विषय अधिकारी परीक्षा में लेना होगा, पाठ्यक्रम का आधा भाग प्रथम वर्ष में शेष द्वितीय वर्ष में निर्धारित रहेगा।

इतिहास

प्रथम प्रश्न पत्र

(आदिकाल से सन् १५२६ ई० तक)

१. (क) भारतीय भूगोल के प्रमुख तथ्य तथा उनका भारत के इतिहास पर प्रभाव।
(ख) भारत के पूर्व एवं उत्तर पाषाण युगों की रूपरेखा, उनके विस्तार एवं सांस्कृतिक स्वरूप के प्रमुख तथ्य का ही विवेचन किया जाय।

२. सिन्धु नदी की घाटी की सभ्यता।

३. आर्य वैदिक काल—
(क) आर्यों का मूल निवास स्थान।
(ख) राजनैतिक संस्थाएँ।
(ग) सामाजिक एवं आर्थिक दशा।

(घ) धर्म, संस्कृति एवं साहित्य

४. ईसा पूर्व छठी शताब्दी

(क) धार्मिक क्रान्ति का युग—जैन धर्म बौद्ध धर्म।

(ख) राजनैतिक स्थिति—मगध का उत्कर्ष, उत्तर पश्चिमी सीमा से यूनानियों का प्रवेश, सिकन्दर का आक्रमण।

५. मौर्य वंश—

(क) चन्द्रगुप्त मौर्य, राजनैतिक एकीकरण एवं शासन प्रबन्ध।

(ख) अशोक—धर्म विजय एवं लोक कल्याण कार्य।

६. केन्द्रीय शक्ति का ह्रास एवं विदेशी आक्रमण (ईसा पूर्व १८० से ३२० ई० तक)

(क) शक, कुषाण कनिष्क-विजय एवं बौद्ध धर्म का प्रसार-महायान, हीनयान।

(ख) कला व साहित्य।

७. केन्द्रीय शक्ति का पुनरुत्थान—

(क) चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त द्वितीय—साम्राज्य का निर्माण।

(ख) शासन प्रबन्ध।

(ग) सामाजिक व धार्मिक दशा—फाह्यान।

(घ) कला, साहित्य व विज्ञान।

(ङ) आर्थिक दशा—उद्योग धन्धे, व्यापार व वैदेशिक सम्बन्ध।

(च) हूण आक्रमण व गुप्त वंश का पतन।

८. प्रान्तीय राज्यों का उदय—वर्धनवंश का उत्कर्ष—

(क) कन्नौज, काश्मीर, गौड़, थानेश्वर का उत्कर्ष।

(ख) विजय एवं शासन प्रबन्ध।

(ग) धर्म—बौद्ध धर्म का प्रचार एवं अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता।

९. वृहत्तर भारत—

(क) भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया व मध्य एशिया में प्रसार।

(ख) व्यापारिक सम्बन्ध।

१०. केन्द्रीय शक्ति का विघटन व विदेशी आक्रमण (६५० ई० से १२५० ई० तक)—

(क) उत्तरी व दक्षिणी भारत के प्रमुख राज्यों का अत्यन्त संक्षिप्त विवरण।

(ख) धार्मिक व सामाजिक दशा।

(ग) इस्लाम उदय व सिन्ध पर अरब का आक्रमण।

(घ) तुर्कों के आक्रमण—महमूद गजनवी व मुहम्मद गौरी।

११. दिल्ली सल्तनत (१२०६ से १३८८)—

(क) सल्तनत का संगठन एवं विस्तार, कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक एवं फीरोज तुगलक।

(ख) मंगोलों के आक्रमण।

(ग) शासन प्रवन्ध।

(घ) धार्मिक नीति।

१२. सल्तनत का विघटन (१३८८ ई० से १५२६ ई० तक)—

(क) तैमूर का आक्रमण, सैयद और लोदी।

(ख) प्रान्तीय राज्य—जौनपुर, बंगाल, गुजरात, मालवा, मेवाड़, विजयनगर एवं बहमनी।

(ग) विघटन के कारण।

१३. संस्कृति और समाज (१२०० ई० से १५२६ ई० तक)—

(क) सामाजिक व आर्थिक दशा।

(ख) धार्मिक दशा—सूफी व भक्ति विचार धाराएं।

(ग) साहित्य व कला।

निर्धारित ुस्तकें :

१. भारतवर्ष का इतिहास—डा०ईश्वरी प्रसाद, इण्डियन प्रेस प्रयाग

२. भारत का इतिहास—सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन मंसूरी

द्वितीय प्रश्न पत्र ५०

(१५२६ ई० से वर्तमान समय तक)

१. मुगल साम्राज्य की स्थापना—बाबर व हुमायूं का राजपूतों व अफगानों से संघर्ष।

२. सूर साम्राज्य—
   (क) शेरशाह व उसकी शासन व्यवस्था।
   (ख) चरित्र।

३. मुगल साम्राज्य का पुनरुत्थान व विकास—
   (क) साम्राज्य का प्रसार, अकबर, अफगानों व अन्य राज्यों से संघर्ष, राजपूत नीति।
   (ख) सामाजिक व धार्मिक सुधार।
   (ग) अकबर का मूल्यांकन।

४. साम्राज्य का चर्मोत्कर्ष—जहांगीर व शाहजहां।

५. साम्राज्य की अवनति—औरंगजेब—
   (क) धार्मिक असहिष्णुता।
   (ख) राजपूत व सिक्ख।
   (ग) मराठा शक्ति का उदय—शिवाजी, शासन प्रबन्ध चरित्र व मूल्यांकन।

६. मुगल काल की सभ्यता व संस्कृति—
   (क) शासन-व्यवस्था।
   (ख) धार्मिक नोति।

(ग) साहित्य व कला।

(घ) सामाजिक व आर्थिक दशा।

७. यूरोपीय शक्तियों का भारत में प्रवेश—पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी व ब्रिटिश।

८. ब्रिटिश शक्ति का अभ्युदय—

(क) व्यापारिक शक्ति से राजनैतिक शक्ति में परिवर्तन।

(ख) साम्राज्य विस्तार (१७६३ से १८५६)।

९. कम्पनी की शासन नीति एवं वैधानिक विकास।

१०. भारत का पुनर्जागरण एवं नव निर्माण।

११. स्वतन्त्रता का संघर्ष—

(क) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारण, विशेषता व परिणाम।

(ख) कांग्रेस का जन्म तथा विकास (१८८५-१९१९ ई० तक का संघर्ष)।

(ग) गांधी युग (१९१९ ई० से १९४७ ई० तक)।

(अ) अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन।

(अ) भारत छोड़ो आन्दोलन, स्वतन्त्रता की उपलब्धि।

१२. स्वतन्त्र भारत की उपलब्धियां एवं समस्याएं (अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन)—

(क) संविधान की विशेषतायें।

(ख) भारत का राजनैतिक एकीकरण।

(ग) पंचवर्षीय योजनायें।

(घ) भारत की विदेशी नीति—गुट निर्पेक्षता।

निर्धारित पुस्तकें :

१. भारतवर्ष का इतिहास—डा० ईश्वरी प्रसाद, इण्डियन प्रेस प्रयाग

२. भारत का इतिहास—सत्यकेतु विद्यालंकार, सरस्वती सदन मंसूरी

नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त

प्रथम प्रश्न पत्र

१. नागरिक शास्त्र—अर्थ तथा महत्व ।

२. नागरिकता—अर्थ, कैसे प्राप्त की जाती है तथा कैसे खोई जाती है, नागरिक के अधिकार तथा कर्तव्य। आदर्श नागरिकता के मार्ग में बाधायें ।

३. व्यक्ति, समाज तथा समुदायों के भेद ।

४. राज्य परिभाषा, नागरिक का राज्य से सम्बन्ध तथा राज्य के कार्य ।

५. शासन प्रणालियां—उनकी परिभाषा ।

६. सरकारका संगठन—विधान मण्डल, कार्यपालिका तथा न्याय पालिका—उनके कार्य ।

७. क़ानून तथा स्वतंत्रता ।

निर्धारित पुस्तकें :

१. नागरिकशास्त्र और संविधान तथा प्रशासन—ले० इकबाल नारायण

२. सरल नागरिक शास्त्र और भारतीय शासन—ले० ओमप्रकाश केला

द्वितीय प्रश्न पत्र

भारतीय नागरिकता तथा प्रशासन, नवीन संविधान के अन्तर्गत भारतीय नागरिक के मूलअधिकार। भारतीय संविधान की रूप रेखा तथा उसकी प्रमुख विशेषतायें। राज्यों का शासन—संगठन तथा केन्द्रीय सरकार के सम्बन्ध । पूर्वोत्तर सीमांत प्रदेश तथा नागालेंड के वैधानिक एवं प्रशासकीय पक्षों का प्रारंभिक

ज्ञान, उत्तर प्रदेश में जनपदीय स्तर पर प्रशासकीय व्यवस्था, प्रमुख अधिकारी तथा उनके कर्तव्य। निम्नांकित का परिचयात्मक ज्ञान।

स्थानीय संस्थाएं—नगरपालिका का प्रशासन, नगरमहापालिका, जिला परिषद, क्षेत्र समितियां और उनका संगठन तथा कार्यविधि।

ग्राम समितियाँ—गांव सभा-संगठन तथा कार्यविधि।

निर्धारित पुस्तकें :

१. नागरिक शास्त्र और संविधान तथा प्रशासन—ले० इकबाल नारायण
२. सरल नागरिक शास्त्र और भारतीय शासन—ले० ओम-प्रकाश केला

अर्थशास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

अर्थशास्त्र के क्षेत्र का प्रारम्भिक ज्ञान—आय का आधारभूत ज्ञान, धन, तुष्टिगुण, कीमत तथा मूल्य और उनकी परिभाषा।

उत्पादन—उत्पादन का अर्थ तथा उसके उपादान, कृषि तथा उद्योग में उत्पादन भूमि के उप विभाजन और विखण्डन के कारण तथा परिणाम, सुधार के उपाय चकबन्दी, सहकारी खेती, प्रमुख कुटीर तथा ग्रामीण उद्योग से वितरण, भूदान और सर्वोदय।

उपभोग—इच्छायें तथा आवश्यकतायें, आवश्यकताओं के लक्षण तथा उनका वर्गीकरण, कृषक और श्रमिक का पारिवारिक बजट बनाने की विधियां, रहन-सहन का स्तर, संतुलित आहार की आवश्यकता तथा उसके प्रमुख तत्व।

विनिमय—विनिमय का अर्थ तथा महत्व, वस्तु विनिमय। कृषि उपज का क्रय-विक्रय, बाजार-हाट तथा मेलों की आवश्यकता और उनका संगठन। द्रव्य के प्रकार सिक्के तथा कागजी मुद्रा, बैंक और

उनके सामान्य कार्य, चैक तथा हुण्डी, सहकारिता। सहकारी साख समिति और उसका संगठन, बहुउद्देशीय सहकारी समिति, सहकारी उपभोक्ता भंडार, जिला सहकारी बैंक राज्य सरकारी बैंक।

वितरण—गावों में व्याज की ऊँची दर के कारण, ग्रामीण ऋण ग्रस्तता-कारण तथा निवारण के उपाय अन्य आवश्यकताओं हेतु ग्रामीण समस्याएँ, सफाई, शिक्षा आवास, अन्य समस्याएँ तथा नियोजन तथा आर्थिक नियोजन, आवास तथा नियोजन उद्देश्य।

निर्धारित पुस्तकें :

१. अर्थशास्त्र प्रवेशिका—डा० एम० एल० सेठ
२. अर्थशास्त्र परिचय—एस० के० मिश्रा

द्वितीय प्रश्न पत्र ५०

आर्थिक—भारत की प्राकृतिक दशा तथा जलवायु, भारत में प्रमुख प्राकृतिक साधनों का प्रारम्भिक ज्ञान, भारतीय कृषि के लिये वनों का महत्व, वनों का कृषि तथा उद्योग धन्धों पर प्रभाव, सिंचाई की समस्याएँ तथा उनका समाधान, शक्ति के स्रोत, उत्तर प्रदेश की बहु-उद्देशीय प्रायोजनाओं के विशेष संदर्भ में विभिन्न प्रकार की कृषि उपज और फसलें—रवी, खरीफ तथा जायद, व्यापारिक तथा अन्य फसलें और उनका आर्थिक महत्व, पशु पालन महत्व तथा समस्यायें, विभिन्न प्रकार की खादें।

उद्योग—वस्त्र, लोहा एवं इस्पात, चीनी, कोयला, सीमेण्ट तथा तेल उद्योग, यह इनका सामान्य परिचय।

परिवहन तथा संचार के साधन—सड़क, रेल, नदी तथा वायु परिवहन डाक, तार, टेलीफोन तथा बेतार का तार। भारत के प्रमुख नगर और उनका वर्णन, प्रमुख बंदरगाह तथा हवाई अड्डे।

पंचवर्षीय योजनाएँ—भारत की प्रथम, द्वितीय व तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं का सामान्य ज्ञान।

निर्धारित पुस्तक : भारतीय अर्थशास्त्र प्रवेशिका—एम० एल० सेठ

विज्ञान

प्रथम प्रश्न पत्र (भौतिक विज्ञान)

सामान्य गुण—लम्बाई, क्षेत्रफल, आयतन संहति और भार की इकाइयाँ, मात्रकों की विधाओं का प्रारम्भिक ज्ञान। वर्नियर कैलिसस पंचमापी और गोलाई मापी। तुला, घनत्व और आपेक्षिक घनत्व। आर्किमिडीज का सिद्धांत एवं आपेक्षिक घनत्व निकालने में इसका प्रयोग, निकल्सन घनत्वमापी, गुरुत्व और गुरुत्वाकर्षण न्यूटन के गति-नियम, बल इसकी नाप और आघूर्ण। कार्य शक्ति और ऊर्जा। द्रव और वायु का दाव, फार्टिन बैरोमीटर। उत्तोलक, उदाहरण और यान्त्रिक क्षमता।

ऊष्मा—ठोस द्रव और गैस का प्रसार, प्रसार गुणङ्कों की परिभाषायें और उनमें सम्बन्ध। ताप और ऊष्मा में अनऊष्मामापन, विभिन्न द्रव थर्मामीटर एवं उनमें सम्बन्ध। संचालन संताहत्रा विकिरण और थर्मस फ्लास्क। ऊष्मा की इकाई, आपेक्षिक ताप, रैनो के उपकरण द्वारा परिगणन। अवस्था परिवर्तन, क्वथनाङ्क, गलनाङ्क, वाष्पन, वाष्पघन आर्द्रता, आपेक्षिक आर्द्रता और शुष्क वायु। गुप्त ऊष्मा बनाने के लिए गुप्त ऊष्मा का परिगणन। यान्त्रिक ऊर्जा और ऊष्मा में सम्बन्ध।

ध्वनि—तरङ्ग, अनुप्रस्थ एवं अनुदैर्घ्य। तरङ्ग दैर्घ्य, आवृत्ति, आयाम। ध्वनिका परावर्तम और वर्तन। वायु और जल में ध्वनि का वेग, ग्रामोफोन।

संस्तुत पुस्तक

१. सरल भौतिक विज्ञान—ले० एच० पी० शर्मा

द्वितीय प्रश्न पत्र (रसायन विज्ञान) ३५

परिभाषा और क्षेत्र। पदार्थ और उसकी अवस्थायें अवस्था परिवर्तन क्वथनाङ्क, गलनाङ्क एवं इन पर अपद्रव्यों का प्रभाव। वाष्पन आसवन, ऊर्ध्वपातन, केलासन, छानना, अवरोपण का ज्ञान एवं उपयोग। विलेयता-जल एवं द्रवों में ठोसों की विलेयता, संतृप्ता-संतृप्त विलयन, जल में ठोसों की कमरे के ताप पर विलेयता, विलेयता पर ताप का प्रभाव। भौतिक और रासायनिक परिवर्तन। तत्व मिश्रण और यौगिक परमाणु और आयुका प्रारम्भिक ज्ञान व भाषा। संयोजकता, रासायनिक सूत्र एवं समीकरण। अम्ल, लवण और भस्म की व्याख्यायें, आक्सीकरण और अवकरण।

निम्नांकित पदार्थों का अध्ययन :—

(अ) वायु—घटक, जीवन चक्र में उपयोग, मोर्चा लगना और जल व वायु की आयतनमितीय और भारात्मक गणनायें।

(ब) आक्सीजन—प्रयोगशाला निर्माण विधियाँ, गुण, उपयोग

(स) हाइड्रोजन— ,, ,, ,, ,, ,,

(द) नाइट्रोजन— ,, ,, ,, ,, ,,

(य) अमोनिया— ,, ,, ,, ,, ,,

(र) जल —श्रोत, कठोरता एवं निराकरण, रचना, आयतनात्मक एवं भारात्मक दृष्टि से।

(ल) नाइट्रिक अम्ल—निर्माण विधि, साधारण गुण और तोल पर प्रतिक्रिया।

संस्तुत पुस्तक

१. आदर्श रसायन विज्ञान—ले० ओ० पी० सक्सेना

प्रायोगिक कार्य ३०

भौतिक विज्ञान—आपेक्षिक घनत्व ज्ञात करना—

(अ) जल में प्लवनशील पदार्थों का

(ब) जल में डूबने वाले पदार्थों का

(स) द्रवों का

वर्नियर कैलीपर्स, पेचनापी, और गोलाईमापी का प्रयोग। फार्टिन वैरोमीटर का प्रयोग। निकल्सन द्रवमापी।

रैनो के उपकरण से ठोस आपेक्षिक ताप ज्ञात करना।

वर्फ की गुप्त ऊष्मा ज्ञात करना।

ध्वनि के संचरण के लिये माध्यम की आवश्यकता सिद्ध करना।

रसायन विज्ञान

(१) जल का आसवन और शोधन।

(२) क्वथनाङ्क पर अपद्रव्यों का प्रभाव।

(३) वायुमण्डल (नाइट्रोजन, आक्सीजन का अनुपात)।

(४) आक्सीजन की प्रयोगशाला में निर्माण विधि।

(५) नाइट्रोजन " " " "

(६) हाइड्रोजन " " " "

(७) केलासन (तूतिया के रवे बनाना।

(८) विलेयता कमरे के ताप पर ज्ञात करना।

अधिकारी द्वितीय वर्ष

विज्ञान

प्रथम प्रश्न पत्र भौतिक विज्ञान ३५

प्रकाश—सरल रैखिक गगन, परावर्तन के नियम। समतल, अवतल और उत्तल दर्पण से प्रतिबिम्ब बनाना, नाभि बिन्दु और नाभ्यान्तर। प्रतिबिम्बों के अभिलसन, अभिवर्द्धन, सूत्र $\frac{1}{4}+\frac{1}{v}=$

$\frac{1}{f} = \frac{2}{4}$ का प्रयोग। अपवर्तन, स्केल का नियम, कोणीय विचलन, पूर्णान्तरित परावर्तन, अपवर्तन का सामान्य जीवन में उपयोग। त्रिपार्श्व लेंसों के भेद, साधारण गणनायें। प्रकाश विश्लेषण इन्द्रधनुष वर्ण पट्ट का प्रारम्भिक ज्ञान। प्रकाशीय यन्त्र—कैमरा, माइक्रोस्कोप, संयुक्त माइक्रोस्कोप एवं खगोलीग दूरदर्शी।

चुम्बकत्व—आकर्षण और प्रतिकर्षण, सोलेनाइड में चुम्बक का व्यवहार, चुम्बकीकरण, विभिन्न चुम्बक, चुम्बकत्व का अणुसिद्धान्त। चुम्बकीय क्षेत्र, बल रेखायें, नगनकोण, दिवपात्।

विद्यु त्—घर्षण विद्युत, दो प्रकार की विद्युत, सुचालक, कुचालक अर्द्ध चालक। प्रेरण, विद्यु तदर्शी, इलैक्ड्रोफोरस। विद्यु त सैल, विद्युत वाहक बल और विभवान्तर। ओह्म का नियम—इसका सत्यापन। विद्युत का चुम्बकीय प्रभाव, फैराडेने के नियम। श्रेणी क्रम और समान्तर क्रम में परिपक्ष संयोजन। धारा का रासायनिक प्रभाव जूल के नियम। विद्युत घण्टी, वल्ब, कलिकित कुण्डल धारा-मापी वोल्ट मीटर।

द्वितीय प्रश्न पत्र

रसायन विज्ञान ३५

रासायनिक संयोग के नियम, तुल्यांकन भार, वायु भार, और इन पर आधारित गणनायें। रेडियो सक्रियता, आइसोटोप, नाभिक ऊर्जा का प्रारम्भिक विवरण। डाल्टन के परमाणु सिद्धान्त की सरल व्याख्या, परमाणु रचना का आधुनिक सिद्धान्त। निम्नाङ्कित पदार्थों का अध्ययन—

(अ) कार्बन—स्त्रोत, अपर रूप, भौतिक रासायनिक सामान गुण, उपयोग।
कार्बनडाइआक्साइड प्रयोगशाला विधि ,,

कार्बन मोनो आक्साइड और कार्बनडाइआक्साइड की तुलना ।

(ब) फास्फोरस—अपर रूप, गुण, उपयोग ।
माचिस उद्योग की प्रारम्भिक जानकारी ।

(द) गन्धक—अपर रूप, गुण, उपभोग ।
सल्फर डाइआक्साइड प्रयोगशाला निर्माण विधि ।
रासायनिक गुण, उपभोग ।
गन्धकाम्ल, उत्पादन, गुण और उपयोग ।

(य) क्लोरीन—प्रयोगशाला निर्माण विधि, रासायनिक गुण ।
सल्फर डाइआक्साइड से विरंजन में तुलना ।
हाइड्रोजन क्लोराइड गैस एवं अम्ल का निर्माण, साधारण गुण और उपयोग ।

(ग) सोडियम—धातु के मुख्य गुण, उत्पादन सोडियम हाइड्रोनाइड साधारण नमक, सोडियम कार्बोनेट और सोडियम बाईकार्बोनेट के गुण और उपयोग ।
निम्नांकित धातुओं के मुख्य भौतिक गुण और उपयोग ।
पारा, तांबा, चांदी, सोना, लोहा, जस्ता, सीसा, टिन, एल्मूनियम ।
निम्नांकित के गुण और उपयोग ।
नीला थोथा, हराकसीस, शोरा, साल अमोनिगन, सुहारा, सिल्वर नाइट्रेट, ल्यूनर कास्टिक, और जिंक सल्फेट ।

प्रायोगिक कार्य ३०

भौतिक विज्ञान—

साधारण दर्पण पर परावर्तन, अवतल दर्पण का आभ्यान्तर ज्ञात करना । त्रिपार्श्व द्वारा विश्लेषण, कांच का बर्तनाङ्क ज्ञात करना ।

संयुक्त सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग, उत्तल लैंस का नाभ्यान्तर ज्ञात करना बल रेखायें खींचना, विद्युत चुम्बक का प्रयोग। चालन और प्रेरण द्वारा विद्युतदर्शी को आवेक्षित करना। ओह्म के नियम का सत्यापन, तार का प्रतिरोध ज्ञात करना। प्रतिरोधों के श्रेणी क्रम और समान्तर क्रम नियमों का सत्यापन।

रसायन विज्ञान—

१. कार्बनक गुण और अपर रूप।
२. कार्बनडाइ आक्साइड (प्रयोगशाला निर्माण विधि)।
३. लवण निर्माण।
४. गन्धक—अपर रूप, सामान्य गुण।
५. निम्नांकित गैसों की प्रयोगशाला निर्माण विधि एवं सामान्य गुण।

सल्फर-डाइ-आक्साइड, क्लोरीन, हाइड्रोजन क्लोराइड, अमोनियम, एवं नाइट्रोजन।

संस्तुत पुस्तकें—

१. सरल भौतिक विज्ञान—ले० एच० पी० शर्मा
२. आदर्श रसायन विज्ञान—ले० ओ० पी० सक्सेना

पण्डित परीक्षा प्रथम वर्ष

अनिवार्य विषय

१. वेद— ५०

१. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (प्रा० वेद विषय तक) १०
२. कठोपनिषद्—म० नारायण स्वामी १०
३. यजुर्वेद (३१, ३२, ३५, ३६, ४० अध्याय) २०
४. वैदिक साहित्य का इतिहास (पाठ्य-विषय सम्वन्धित) १०

सहायक पुस्तकें—

१. वैदिक साहित्य की रूपरेखा—सत्यनारायण पांडे
२. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति (बलदेव उपाध्याय)
३. वेद-विद्या—वसुदेव शरण अग्रवाल
४. वैदिक साहित्य का इतिहास—डा० राजकिशोर सिंह
५. सायण और दयानन्द—गंगाप्रसाद उपाध्याय ।

२. दर्शन— ५०

१. तर्कभाषा—आचार्य विश्वेश्वर ४०
२. न्याय दर्शन का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक विवेचन १०

सहायक पुस्तकें—

१. भारतीय दर्शन—बल्देव उपाध्याय
२. भारतीय दर्शन—दत्त एवं चटर्जी
३. भारतीय दर्शन—उमेश मिश्र

३. संस्कृत-साहित्य—

१. कादम्बरी (कथामुख पर्यन्त)—प्रकाशन केन्द्र अमीनाबाद १५
लखनऊ, व्याख्याकार : धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री

२. 'दयानन्द दिग्विजय' प्रथम सर्ग १०
३. संस्कृत साहित्य का इतिहास (गद्य-साहित्य) १५
४. निबन्ध १०

सहायक पुस्तकें—

१. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा—चन्द्रशेखर पाण्डेय
२. संस्कृत कवि दर्शन—भोला शंकर व्यास
३. लघु संस्कृत निबन्ध रत्नाकर : प्रकाशन केन्द्र अमीनाबाद लखनऊ

४. आर्यभाषा— १००

प्रथम पत्र

१. भ्रमर-गीत—सार सं० रा० शु० [प्रारम्भ के १०० पद] २०
२. कुरुक्षेत्र—१, २, ६ सर्ग—दिनकर १५
३. अजात शत्रु—प्रसाद १५

द्वितीय पत्र

(क) इतिहास—

४. हिन्दी साहित्य का इतिहास—आदिकाल (रा० शु०) १५

(ख) आलोचना— १०

५. 'काव्य के रूप' पूर्वार्द्ध (गुलाबराय) साहित्य का स्वरूप, काव्य की परिभाषा, एवं विभाग, दृश्य-काव्य-विवेचना नामक शीर्षक।

(ग) रस एवं अलंकार— १०

१. रसों की परिभाषा, नव रसों के उदाहरण, स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव।
२. अनुप्रास, वक्रोक्ति, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, व्यतिरेक, उल्लेख, स्मरण, भ्रान्ति, संदेह, अपन्हुति, अतिशयोक्ति, दीपक, निदर्शना, अप्रस्तुत-प्रशंसा, अन्योक्ति,

विभावना, विशेषोक्ति, असंगति, यथासंख्य, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, तद्गुण, अतद्गुण, मीलित, उन्मीलित।

(घ) निवन्ध-साहित्यिक विषयों पर— १५

सहायक ग्रन्थ—

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास—डा० राजनाथ शर्मा
२. काव्य के रूप—गुलाबराय
३. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त—गोविन्द त्रिगुणायत
४. नवरस—गुलाबराय
५. काव्य-प्रदीप : संजय पुस्तक मंदिर राजामण्डी आगरा

५. अंग्रेजी— १००

I Paper—1. Simple Prose for Intermediate.
—(J. N. Sinha) 20
2. Stray flours—(M. N. Shukla) 20
3. Modern short story by—
(K. P. Rastogi first three story) 10

II Paper—Translation 20
Unseen 10
Essay 20

Note—The course of Pandit is according to the course prescribed by the Board of High Shool & Intermediate Educaticn U. P.

पण्डित परीक्षा द्वितीय वर्ष

अनिवार्य विषय

१. वेद— ५०

१. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (वेद-संज्ञा विचार से वेदोक्त, धर्म विषय तक) १०

२. प्रश्नोपनिषद् १०
३. अथर्ववेद का पृथिवी-सूक्त २०
४. वैदिक साहित्य (पाठ्य विषय सम्बन्धी)

सहायक पुस्तकें—

१. वैदिक साहित्य और संस्कृति
२. वैदिक साहित्य की रूपरेखा
३. वैदिक वाङ्मय का इतिहास—श्री रमाकान्त

२ः दर्शन— ५०

१. सांख्य तत्त्व—कौमुदी (१–२० कारिका पर्यन्त तत्त्व कौमुदी सहित अवशिष्ठ कारिका मात्र) ४०
२. दर्शन साहित्य का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक विवेचन (पाठ्य विषय सम्बन्धी) १०

सहायक पुस्तकें—

१. भारतीय दर्शन—बल्देव उपाध्याय
२. ,, ,, —उमेश मिश्र

३. संस्कृत साहित्य— ५०

१. उत्तररामचरित—भवभूति २५
२. निबन्ध १५
३. संस्कृत साहित्य का इतिहास (नाटक एवं महाकाव्य सम्बन्धी) १०

सहायक पुस्तकें—

१. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा
२. संस्कृत कवि दर्शन
३. संस्कृत नाटक समीक्षा—ले० इन्द्रपालसिंह
४. संस्कृत निबन्ध-रत्नाकरः—ले० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री

४. आर्यभाषा— १००

प्रथम-पत्र ५०

१. प्रिय-प्रवास, (हरिऔध) १, ३, ५, १०, सर्ग १५
२. उद्धव-शतक (रत्नाकर) २०
३. स्कन्द गुप्त (प्रसाद) १५

सहायक पुस्तकें—

१. प्रियप्रवास में काव्य संस्कृति एवं दर्शन
२. आधुनिक हिन्दी नाटक—डा० नगेन्द्र
३. रत्नाकर और उनकी काव्य कला—वी० एन० भट्ट

द्वितीय-पत्र ५०

(क) इतिहास— १५

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास (भक्तिकाल) रा० शु० ।

(ख) आलोचना एवं काव्यशास्त्र— १०

१. श्रव्य काव्य-विवेचन ।
२. रीति, गुण, एवं दोषों का परिचय ।
३. रीति एवं रीतियों के भेद, उदाहरण ।
४. गुण—एवं दोष
दोष एवं उसके लक्षण । रस-दोष, श्रुति कटुत्त्व, च्युत-संस्कृतित्त्व, अश्लीलत्त्व, ग्राम्यत्त्व, अप्रतीतत्त्व, क्लिष्टत्त्व, न्यूनपदत्त्व, अधिकपदत्त्व, दुष्क्रमत्त्व, पुनरुक्ति ।

(ग) निबन्ध— १५

सहायक-ग्रन्थ—

१. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास—राजनाथ शर्मा
२. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त—त्रिगुणायत
३. काव्य रूप (उत्तरार्द्ध)—गुलाबराय

५. अंग्रेजी— १००

I Paper—1. An Argosy of short biographies (By S. C. Bhattacharya.) First six lessons. 20

2. Sacrifice, Edited by R. K. Bansal.

or

Bharat—Dr. A. K. Dixtt 20

3. Modon short story. K. P. Rastoge. 10

II Paper—Translation 15

Active-voice, Passive-voice, Direct-indirect, Analysis, Synthesis, Transformation of sentence, Idioms. 10

Essay 15

Unseen 10

ऐच्छिक-विषय

[निम्नलिखत में से एक विषय का चयन करना होगा]

प्रथम वर्ष

१. विशेष वेद

१. यजुर्वेद संहिता, १–१० अध्याय २००
कात्यायन श्रौत सूत्र १–३ अध्याय

२. वैदिक सम्पत्ति प्रथम खण्ड धर्म का आदि स्रोत १००

२. तर्क (विशेष दर्शन)

१. न्याय दर्शन वात्स्यायन भाष्य वैशेषिक दर्शन प्रशस्तपाद १००

२. तर्क शास्त्र I वि० दा० केड़िया १००

३. सिद्धान्त (तुलनात्मक धर्म)

१. धर्म का आदिस्त्रोत (गं० प्र०) पुराण मत पर्यालोचन १००
२. वैदिक सम्पत्ति प्रथम खण्ड, आर्य समाज का इतिहास I १००

४. साहित्य

१. साहित्य दर्पण १–६ दशकुमारचरित अपहारवर्मान्त १००
२. मेघदूत, वृत्तरत्नाकर, उत्तर रामचरित १००

५. व्याकरण

१. काशिका १–२ अध्याय १००
२. महाभाष्य १–३ आन्हिक परिभाषिक (वेदाङ्ग प्रकाश) १००

द्वितीय वर्ष

१. विशेष वेद

१. यजुर्वेद संहिता ११–१७ अध्याय तथा कात्यायन श्रौतसूत्र ४–६ अध्याय १००
२. वैदिक सम्पत्ति द्वितीय खण्ड, आर्य समाज का इतिहास १००

२. तर्क (विशेष दर्शन)

१. न्याय सिद्धान्त मुक्तावली तथा न्याय बिन्दु १००
२. तर्कशास्त्र II वि० दा० केडिया १००

३. सिद्धान्त (तुलनात्मक धर्म)

१. धम्म पद, बुधिज्म (रेज डेविडस) ऐसेज आन पार्शी रिलीजन (दाग)
३. वैदिक सम्पत्ति २ य खण्ड आर्य समाज का इतिहास II १००

४. साहित्य

१. साहित्य दर्पण ७–१०, हर्ष चरित पूर्वार्द्ध — १००

२. कुमार सम्भव १–८, मृच्छ कटिक — १००

५. व्याकरण

१. काशिका ३, ४ अध्याय — १००

२. महाभाष्य ४–६ आन्हिक, सौवर (वेदांग प्रकाश — १००

पण्डित प्रथम वर्ष

आयुर्वेद — २००

प्रथम-पत्र — ५०

१. माधव-निदान (अश्मरी पर्यन्त)

२. चक्रदत्त („ „)

द्वितीय-पत्र — ५०

१. अष्टांग हृदय-सूत्र स्थान ।,

२. भावप्रकाश निघण्टु (श्री विश्वनाथ द्विवेदी कृत टीका)

आलोच्य-ग्रन्थ—

१. द्रव्य गुण विज्ञानम् (आचार्य यादव जी त्रिविक्रम)

तृतीय-पत्र — ५०

१. हमारे शरीर की रचना (प्रथम-भाग)—डा० त्रिलोकीनाथ

अथवा

मानव शरीर रचना विज्ञान (प्रथम-भाग)

चतुर्थ-पत्र — ५०

क्रियात्मक-परीक्षा ।

(उपर्युक्त तीनों प्रश्न-पत्रों पर आधारित)

पण्डित परीक्षा द्वितीय वर्ष

आयुर्वेद २००

प्रथम-पत्र ५०

१. माधवनिदा (उत्तरार्धं-प्रमेह से समाप्ति पर्यन्त)
२. चक्रदत्त (,, ,,)

द्वितीय-पत्र ५०

१. अष्टांग हृदय कल्प स्थान—छठा अध्याय ।
उत्तर स्थान—१-७ और ३५-४० तक

तृतीय-पत्र ५०

१. हमारे शरीर की रचना—द्वितीय भाग २५

अथवा

मानव शरीर विज्ञान (मु० स्व० वर्माकृत) द्वितीय भाग
२. मेटेरिया मेडिका (डा० शिवदयालु गुप्त A. M. S.)

निम्न चुनी हुई औषधियां— २५

अमोनियम, कैल्शियम, मैगनेशियम, गन्धकाम्ल, साइट्रिक-एसिड, लवणाम्ल, सिलवरनाइट्रेट, जिंकआक्साइड, अलकोहल, क्लोरोफार्म, ईथर, अहिफेन, कुपीलु (नक्स वोमिका), वेलेडोना, एट्रोपीन, हीमेट्रोपीन, कोकेन, प्रोकेन, हायोसाइमस, डिजिटेलीस, एड्रेनैलीन, इफेड्रीन, एसिडनाइट्राइट, कार्बन डाइआक्साइड, आक्सिजन, क्रियजोट, टेनिक एसिड, सेन्टोनिन, कार्बन टेट्रा-क्लोराइड, पिच्युट्री एक्स्ट्राक्ट, सैक्सग्लैंड, एस्प्रीन, फेनासिटीन, क्विनाइन और तत्सम औषधियाँ, पारद, आयोडाइड, सल्फाड्रग्स, ऐन्टीवायोटिक्स, पोटाशियम परमैंगनेट, हाइड्रोजन परक्साइड, आयोडिन, एक्रीफ्लेबिन, मर्क्युरोक्रोम, बोरिक एसिड, विटामीन्स,

थायोराइड, इन्स्युलिन, लिवर एक्स्ट्राक्ट, ग्लिसरीन, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, क्लोरोमाइसेरीन, आरोमाइसिन ।

चतुर्थ पत्र ५०

क्रियात्मक परीक्षा

इतिहास

प्रथम प्रश्न पत्र

[सिन्धुघाटी को सभ्यता से सन् १५२६ ई० तक]

१. भारतीय इतिहास जानने के साधन ।
२. सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता ।
३. आर्य-पूर्व वैदिक काल ।
४. आर्य-उत्तर वैदिक काल ।
५. ईसा पूर्व छठी शताब्दी ।
६. मौर्य वंश ।
७. केन्द्रीय शक्ति का ह्रास व विदेशी आक्रमण [ईसा पूर्व १८० से ३२० ईसा तक]
८. केन्द्रीय शक्ति का पुनरुत्थान ।
९. हर्ष वंश का उत्कर्ष ।
१०. वृहत्तर भारत ।
११. केन्द्रीय शक्ति का विघटन व विदेशी आक्रमण [६५० ई० से १२०० ई० तक] ।
१२. दिल्ली सल्तनत [१२०६ ई० से १३८८ ई०] ।
१३. सल्तनत का विघटन [१३८८ ई० से १५२६ ई० तक] ।
१४. संस्कृति और समाज [१२०० ई० से १५२६ ई० तक] ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

[१५२६ ई० से वर्त्तमान काल तक]

१. मुगल साम्राज्य की स्थापना ।
२. सूर साम्राज्य ।
३. मुगल साम्राज्य का पुनरुत्थान व विकास ।
४. साम्राज्य का चरमोत्कर्ष और अवनति । [जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब]
५. उत्तर-पश्चिमी सीमा नीति [१५५६–१७०७] ।
६. मुगल काल की सभ्यता व संस्कृति ।
७. मराठा शक्ति का अभ्युदय ।
८. यूरोपीय शक्तियों का भारत में प्रवेश ।
९. प्राकृतिक सीमाओं की आवश्यकता ।
१०. कम्पनी की शासन नीति एवं वैधानिक निवास [१७७४–१८५७] ।
११. भारत का पुनर्जागरण ।
१२. स्वतन्त्रता का संघर्ष, स्वतन्त्र भारत की उपलब्धि एवं समस्यायें—संविधान की विशेषताएँ, भारत का राजनीतिक एकीकरण, सामाजिक एवं आर्थिक नवनिर्माण में पंचवर्षीय योजनाएँ, भारत की विदेशी नीति, गुट निरपेक्षता, तथा पंचशील, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव ।

नोट—[उपर्युक्त शीर्षकों का इण्टरमोडियेट के पाठ्यक्रम के आधार पर विस्तृत अध्ययन] ।

संस्तुत पुस्तकें—

१. इतिहास दर्शन—ले० ओ० पी० भटनागर तथा एम० पी० भटनागर
२. भारतवर्ष का इतिहास—ले० डा० ईश्वरी प्रसाद ।

नागरिक शास्त्र

प्रथम-पत्र

नागरिकशास्त्र का अर्थ, विषय, विस्तार तथा अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, समाज, राज्य तथा समुदायों के विविध रूप।

राज्य तथा व्यक्ति—प्रभुसत्ता, विधि, स्वतन्त्रता और समानता तथा अधिकार।

राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त।

राज्य के कार्य, कल्याणकारी राज्य का अर्थ।

शासन प्रणाली के भेद, संविधान, शासन का स्वरूप, अधिकारों के विभाजन का सिद्धान्त।

(क) विधान मण्डल—राजनीतिक दल तथा जनमत, द्विसदनात्मक व्यवस्थापिका।

(ख) कार्यपालिका—विविध रूप तथा नियुक्ति की विधियाँ व्यवस्थापिका से सम्बन्ध।

(ग) न्यायपालिका—नियुक्ति, कार्यविधि, आधुनिक न्यायपालिका के कार्य तथा महत्व।

नागरिकता—अर्थ, नागरिकता प्राप्त करने की विधि, नागरिक के अधिकार तथा कर्तव्य, आदर्श नागरिकता के मार्ग में बाधायें।

नागरिक जीवन के आदर्श—देशभक्ति, राष्ट्रीयता, अन्तर्राष्ट्रीयता, विश्व सरकार।

द्वितीय प्रश्न पत्र

१. भारतीय संघ का संविधान, गुण दोष।

२. संघ सरकार का गठन तथा कार्यविधि।

राज्यों की कार्यपालिका।

राज्यों का विधान मण्डल।

दोनों सदनों के पारस्परिक तथा कार्यपालिका और न्याय-पालिका से सम्बन्ध ।

भारतीय न्यायपालिका, सर्वोच्च न्यायालय उसका महत्व ।

उत्तर प्रदेश की न्याय-व्यवस्था ।

भारत में सार्वजनिक सेवायें, उनके महत्व, कार्य तथा लोक सेवा आयोग ।

स्थानीय स्वायत्त शासन तथा उसका महत्व ।

(क) नगर पालिकाएँ, नगर महापालिकाएँ तथा जिला परिषद् ।

(ख) क्षेत्र समिति, गाँव सभा, पंचायत तथा पंचायती ।

(ग) सहकारी समितियाँ तथा सामुदायिक विकास की योजनाएँ ।

भारतवर्ष में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन, तथा देश के राजनीतिक तथा राष्ट्रीय जीवन पर उनका प्रभाव, भारत में राजनीतिक दल ।

भारतीय आर्थिक जीवन—

(क) कृषक उसकी समस्यायें और ग्राम्य जीवन ।

(ख) उद्योग तथा नगरों का जीवन ।

(ग) नियोजित अर्थ-व्यवस्था ।

(घ) राष्ट्रीय योजनाओं का कार्यक्रम ।

भारत तथा एशिया और विश्व ।

राष्ट्रमण्डल देश ।

चीन और पाकिस्तान के संदर्भ में भारत का विशिष्ट अध्ययन ।

संस्तुत पुस्तकें—

(१) भारतीय संविधान और नागरिक जीवन—ले० ओमप्रकाश केला ।

(२) नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त—ले० ओमप्रकाश केला ।

(३) नागरिक शास्त्र के क, ख, ग,—ले० मदन मोहन पाण्डे ।

समाजशास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र (समाजशास्त्र के मूल तत्व)

समाज की प्रकृति—कल्पना और विशेषताएँ।

मानव तथा पशु समाज में अन्तर, व्यक्ति और समाज।

समाजशास्त्र का प्रकृति और क्षेत्र। समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध—मनोविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र।

समुदाय समिति और संसद की संकल्पना। सामाजिक नियन्त्रण परिवार, समूह, धर्म; नैतिकता, प्रथाएँ। भौगोलिक और सांस्कृतिक पर्यावरण, इनका सामाजिक जीवन पर प्रभाव। सामाजिक विघटन। अपराध और बाल अपराध, इनके कारण और उपचार। सामाजिक परिवर्तन की संकल्पना और इनके विभिन्न कारक।

द्वितीय प्रश्न पत्र (भारतीय सामाजिक संगठन)

भारतीय सामाजिक संगठन तथा इसकी प्रमुख विशेषतायें—चार वर्ण।

जाति-व्यवस्था—इसकी विशेषताएँ, कार्य और परिवर्तन।

संयुक्त परिवार—विशेषताएँ, कार्य दोष तथा परिवर्तन के कारक।

आश्रम व्यवस्था—महत्व एवं मूल्यांकन।

विवाह, उद्देश्य प्रकार एवं निषेध। सामाजिक विधान और विवाह पर इस का प्रभाव।

भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान—अतीत और वर्तमान पंचायतों और सहकारिता का ग्रामीण समाज में महत्व। औद्योगीकरण और नगरीकरण का वर्तमान भारतीय समाज पर प्रभाव,

निर्धनता और बेकारी कारण और उपचार। पंचवर्षीय योजनाओं में समाज कल्याण का संक्षिप्त विवरण।

संस्तुत पुस्तकें—

(१) समाज शास्त्र की पृष्ठ भूमि—ले० शम्भूरत्न त्रिपाठी।
(२) भारतीय समाज की रूपरेखा—ले० प्रभाकर ठाकुर।

अर्थशास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

परिचय—अर्थशास्त्र की परिभाषा, विषय, क्षेत्र तथा विज्ञानों से सम्बन्ध, अर्थशास्त्र के नियम, आर्थिक जीवन का विकास।

उत्पादन, श्रम, पूंजी, संगठन तथा राजस्व।

(उपर्युक्त शीर्षकों का इण्टरमीडिएट के पाठ्यक्रम के आधार पर विस्तृत अध्ययन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

विनिमय, बाजार, द्रव्य, वितरण, ब्याज।

(उपर्युक्त शीर्षकों का इण्टरमीडिएट के पाठ्यक्रम के आधार पर विस्तृत अध्ययन)

संस्तुत पुस्तकें—

१. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त [प्रथम भाग]—डा० एम० एल० सेठ
२. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त [भाग २]—डा० एम० एल० सेठ

शिक्षाशास्त्र

प्रथम पत्र

शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त एवं आधुनिक शैक्षिक विकास।

प्रस्तावना—शिक्षा का अर्थ, प्रचलित एवं वैज्ञानिक, शिक्षा का महत्व, आवश्यकता एवं उपयोगिता, शिक्षा का स्वरूप।

शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा के अभिकरण—गृह, विद्यालय समुदाय स्थानीय संस्थाएँ एवं राज्य। शिक्षा प्रणालियाँ।

शैक्षिक विचार धारा का विकास—(क) प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन समय में शिक्षा का संक्षिप्त पुर्निनरीक्षण।

(ख) भारतीय शिक्षक—पण्डित मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, स्वामी दयानन्द।

शैक्षिक प्रशासन एवं संगठन—पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चशिक्षा। स्थानीय क्षेत्रीय, जिला स्तरीय शिक्षा का संगठन। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली।

शिक्षा की समस्यायें—शिक्षा का प्रसार, शैक्षिक स्तर, बालिकाओं की शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा।

द्वितीय प्रश्न पत्र (शिक्षा मनोविज्ञान)

१. शिक्षा-मनोविज्ञान—(क) अर्थ एवं क्षेत्र, (ख) उपयोगिता एवं महत्व।
२. बालक का किशोरावस्था तक विकास—(क) प्रारम्भिक बाल्यकाल, शारीरिक एवं मानसिक विकास, भाषा का विकास एवं सामाजिक विकास। (ख) पूर्व किशोरावस्था एवं किशोरावस्था की अवस्थाएँ—शारीरिक एवं मानसिक विकास, सामाजिक विकास।
३. व्यक्तिगत भेद—शारीरिक, मानसिक एवं व्यक्तित्व भेद।
४. सीखना—(क) अर्थ, सीखने की प्रक्रिया, प्रयास एवं त्रुटि, सूझ, सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन, सीखने के नियम। (ख) प्रेरणा, अर्थ एवं सीखने में इसका स्थान। (ग) रुचि, पुरस्कार एवं दंड।
५. मानसिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान, मानसिक स्वास्थ्य ज्ञान एवं मानसिक स्वास्थ्य के अर्थ एवं महत्व।

६. परीक्षण एवं निदेशन—(क) बुद्धि का सामान्य ज्ञान, उप- लब्धि एवं व्यक्तित्व परीक्षण, (ख) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन उनके अर्थ एवं महत्व।

संस्तुत पुस्तकें—

१. शिक्षा के सिद्धान्त और आधुनिक विकास—ले० सरयू प्रसाद चौबे।
२. शिक्षा मनोविज्ञान के मूल सिद्धान्त—ले० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी।

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष [कक्षा १३]

(अनिवार्य विषय)

१. वेद—	५०
१. ऋक्सूक्त-रत्नाकर—१-१० सूक्त डा० रामकृष्णाचार्य [पीटर्सन के आधार पर]	२०
२. निरुक्त—१, २, ४, ७ अध्याय	२०
३. वैदिक इतिहास (पाठ्य विषय सम्बन्धी)।	१०

सहायक-पुस्तकें—

१. वैदिक साहित्य और संस्कृति
२. वैदिक साहित्य की रूपरेखा

१. दर्शन—	५०
१. योग-दर्शन, व्यास-भाष्य १-२ पाद, ३ के १५ सूत्र ४ पा०;	४०
२. पाठ्य विषय सम्बन्धी दर्शन-साहित्य का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक विवेचन।	१०
३. संस्कृत साहित्य—	५०
१. वेणी संहार (द्वितीय अंक छोड़कर)	१०
२. मेघदूत (पूर्वमेघ)	१०
३. शिशुपाल-वधम् १ सर्ग	१०
४. संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन	१०
५. निबन्ध	१०

सहायक-ग्रन्थ—

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास—वल्देव उपाध्याय
२. संस्कृत नाटक समीक्षा—इन्द्रपाल सिंह
३. संस्कृत काव्यकार—डा० हरिदत्त
४. संस्कृत निबन्ध-रत्नाकरः—धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री

४. आर्यभाषा— १००

प्रथम पत्र

१. साकेत १, २, ८, ९, सर्ग २०
२. चिन्तामणि १, ३, ५, ६, १२, १३, १५, १६, १५
३. गोदान १५

सहायक पुस्तकें—

१. साकेत एक अध्ययन—डा० नगेन्द्र
२. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और चिन्तामणि—डा० राज-किशोर सिंह
३. आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धान्त—डा० रामलाल सिंह
४. प्रेमचन्द्र की उपन्यास कला—जनार्दन प्रसाद झा
५. प्रेमचन्द्र—राजेश्वर गुरु

द्वितीय पत्र—

(क) इतिहास—रीतिकाल— २०
१. हिन्दी साहित्य का इतिहास (रा० शु०)

(ख) आलोचना— १५
काव्य-सम्प्रदाय, परिभाषा, काव्य एवं कला, मूल-प्रेरणा, सत्य शिवं सुन्दरम् ।

(ग) निबन्ध— १५

सहायक पुस्तकें—

१. सिद्धान्त और अध्ययन (पूर्वार्ध)

२. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त—डा० त्रिगुणायत
३. काव्यशास्त्र—डा० भागीरथ मिश्र

५. अंग्रेजी— १००

I paper— 50

(1) Agra University p. No 44—(Ten short stories) 25

(2) Agra University p. No 45—(Gems of English prose) 25

II paper— 50

Translation 10

Unsean, Letters, Application writing 15

Applied grammar 15

(Aecording to the syllabus of Agra University)

Essay 10

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष (कक्षा १४)

(अनिवार्य-विषय)

१. वेद— ५०

१. ऋक्-सूक्त-संग्रह पीटर्सन व्याख्याकार डा० रामकृष्णाचार्य २०
निम्नलिखित सूक्त—१२-१६, १६, २०, २२, २३, २६, ३० और ३२

२. भाषा-विज्ञान—

(i) भाषा, भाषा-विज्ञान, शाखाएँ, प्रशाखाएं, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक।

(ii) भाषा विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।

(iii) भाषा के विभिन्न रूप : भाषा, बोली, उपबोली, व्यक्ति बोली आदि।

(iv) भाषाओं का वर्गीकरण, विश्व के भाषा परिवार तथा उनका सामान्य-परिचय, भारोपीय-परिवार।

(v) ध्वनि-विज्ञान तथा उसकी शाखाएँ, उच्चारण-अवयव, वर्गीकरण, मात्रा, बलाघात, सुर, सुर-लहर, अक्षर, ध्वनि-परिवर्तन, कारण, दिशाएँ, ध्वनि-ग्राम-विज्ञान।

(vi) रूप-विज्ञान, रूप-परिवर्तन, रूप ग्राम-विज्ञान, रूप ध्वनि ग्राम-विज्ञान।

(vii) वाक्य-विज्ञान।

(viii) अर्थ-विज्ञान।

(ix) शब्द-समूह, शब्दों का वर्गीकरण, शब्द-समूह में परिवर्तन कारण-दिशाएँ।

सहायक पुस्तकें—

१. भाषा-विज्ञान—भोलानाथ तिवारी
२. भाषा-विज्ञान की भूमिका—डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा
३. संस्कृत भाषा-विज्ञान—डा० राजकिशोर सिंह

वैदिक साहित्य—

वैदिक साहित्य और संस्कृति—बल्देव
वैदिक साहित्य की रूपरेखा—पाण्डेय

२. दर्शन	५०
१. वेदान्तसार।	४०
२. सम्बन्धित दर्शन का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक-विवेचन	१०
३. संस्कृत-साहित्य	५०
१. प्रबोध-चन्द्रोदय	१५
२. नैषधीय-चरितम् १ सर्ग	१५

३. निबन्ध — १०

४. भारतीय-संस्कृति का परिचय — १०

सहायक ग्रन्थ—

१. भारतीय-संस्कृति की वैदिक धारा (मंगल देव)

२. प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति (संस्कृति खण्ड)

४. आर्यभाषा— ५०

प्रथम पत्र

१. कामायनी—(चिन्ता, आशा, श्रद्धा, लज्जा, रहस्य)। — २५

२. विनय पत्रिका—स्तोत्रों को छोड़कर। — २५

द्वितीय पत्र

(क) इतिहास—आधुनिक काल।

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास—राजनाथ शर्मा

(ख) आलोचना

सिद्धान्त और अध्ययन गुलाबराय उत्तरार्ध

(ग) निबन्ध।

५. अंग्रेजी— १००

I paper— 50

1. Agra University publication No. 42
2. Agra University publication No. 43

II paper 50

(A) Translation — 10

(B) Unseen — 15

(C) Applied grammer & Essays, according to the syllabus of Agra University. — 15+20

शिरोमणि परीक्षा,

ऐच्छिक विषय

[एक विषय लेना होगा]

प्रथम वर्ष

१. विशेष वेद

१. यजुर्वेद संहिता १८–२२ अध्याय	७५
२. शतपथ ब्राह्मण १–२ कांड	५०
३. वैदिक सम्पत्ति चतुर्थ खंड	५०
संस्कार चन्द्रिका	२५

२. तर्क (विशेष दर्शन)

१. मीमांसा शावर भाष्य १, २ अ०	७५
२. प्रमाण मीमांसा (जैन)	७५
३. मनोविज्ञान मीमांसा (विश्वेश)	५०

३. सिद्धान्त (तुलनात्मक धर्म)

१. ओल्ड टेस्टामेण्ट १, २। न्यू टेस्टामेण्ट मैथ्यू। क्रीड आफ क्रिश्चियनडम	५०
२. वैदिक सम्पत्ति तृतीय खण्ड	५०
संस्कार चंद्रिका	५०
३. व्याख्यान शास्त्रार्थ	५०

४. साहित्य

१. काव्य प्रकाश १-६ उल्लास	१००
२. कादम्बरी अच्छोद सर पर्यंत	५०
३. अनर्घराघव	५०

५. व्याकरण	
१. काशिका ५, ६ अध्याय	१००
२. महाभाष्य ७–९ आन्हिक	५०
३. वेयाकरण भूषणसार	५०

द्वितीय वर्ष

१. विशेष वेद	
१. यजुर्वे संहिता २३–४० अ०	७५
२. शतपथ ब्राह्मण तृतीय कांड	५०
३. वैदिक सम्पत्ति चतुर्थ खंड	५०
आस्तिकवाद (गंगाप्रसाद)	२५
२. तर्क (विशेष दर्शन)	
१. वेदान्त ३, ४ अ० शाङ्करभाष्य	७५
२. खण्डन खण्ड खाद्य १ अध्याय	७५
३. नीतिशास्त्रन् (विश्वेश)	५०
३. सिद्धान्त (तुलनात्मक धर्म)	
१. सेल्स इन्ट्रोडक्शन टु कुराअन	२५
विश्व धर्म दर्शन	२५
२. वैदिक सम्पत्ति चतुर्थ खंड	५०
आस्तिकवाद	५०
३. व्याख्यान शास्त्रार्थ	५०
५. साहित्य	
१. काव्य प्रकाश ७–१० उल्लास	१००
२: नैषध १–३ सर्ग	५०
३. प्रबोध चन्द्रोदय	५०

६. व्याकरण

१. काशिका ७, ८ अध्याय	१००
२. महाभाष्य अङ्गाधिकार	५०
३. परम लघु मञ्जूषा	५०

(समाज-शास्त्र)

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे। जिसमें प्रत्येक १०० अंक का होगा।

प्रथम प्रश्न पत्र

समाज शास्त्र के तत्व—

(१) समाज शास्त्र का क्षेत्र तथा विषयवस्तु। (२) समाज शास्त्र की प्रकृति। (३) समाज शास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञान। (४) भारत में समाज शास्त्र।

प्राथमिक परिभाषायें—

(१) समाज की प्रकृति, (२) मानव तथा पशु समाज, (३) सरल और जटिल समाज, (४) समुदाय : अवधारण तथा प्रकार, (५) स्थिति तथा भूमिका, (६) सामाजिक संरचना, (७) प्रवार्य, (८) सामाजिक संगठन, (९) समाजीकरण।

सामाजिक नियन्त्रण—

(१) सामाजिक नियन्त्रण, (२) धर्म तथा नैतिकता, (३) प्रथा और कानून।

सामाजिक परिवर्तन—

(१) सामाजिक परिवर्तन, (२) सामाजिक उद्विकास, (३) सामाजिक प्रगति, (४) सामाजिक क्रान्ति, (५) भारत में सामाजिक परिवर्तन।

संस्तुत पुस्तकें—

(१) समाज का शास्त्रीय विवेचन—लेखक रामगुलाम
(२) समाज शास्त्र—लेखक गोपाल कृष्ण अग्रवाल
(३) समाज शास्त्र—लेखक डा० आर० एन० सक्सेना तथा अन्य

द्वितीय प्रश्न पत्र

(१) सामाजिक समूह की प्रकृति, (२) प्राथमिक तथा द्वैतियक समूह, (३) ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय, (४) सामाजिक स्तरीकरण, (५) जनति व्यवस्था, (६) वर्ग व्यवस्था, (७) मीठ व्यवहार, (८) जनता तथा जनमत, (९) विवाह, (१०) परिवार, (११) पारिवारिक विघटन, (१२) संयुक्त परिवार।

प्रमुख संस्थायें—

(१) संस्था की धारणा, (२) आर्थिक संस्थायें, (३) राजनीतिक संस्थायें, (४) धार्मिक संस्थायें, (५) विज्ञान प्रौद्योगिकी तथा समाज।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) समाज शास्त्र लेखक—गोपाल कृष्ण अग्रवाल

(२) समाज शास्त्र लेखक—डा० आर० एन० सक्सेना तथा अन्य

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र (भारतीय समाज तथा समस्यायें)

भारत में विवाह तथा परिवार—

(१) हिन्दू विवाह, (२) मुस्लिम विवाह, (३) ईसाई विवाह, (४) भारतीय जन जातियों में विवाह, (५) परिवार धारणा तथा स्वरूप, (६) संयुक्त परिवार व्यवस्था।

संस्थात्मक समस्यायें—

(१) भारतीय जातिय व्यवस्था, (२) जातिय व्यवस्था में परिवर्तन, (३) जातिय पंचायतें, (४) अस्पृश्यता, (५) जनतिय व्यवस्था तथा राष्ट्रीय जीवन, (६) जन जातियां तथा राष्ट्रीय जीवन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

(१) भारत में जीवन के धार्मिक आधार, (२) वर्ण व्यवस्था, (३) आश्रम व्यवस्था, (४) भारत में प्रमुख धर्म, (५) धर्म तथा कर्म-

काण्डों की विविधता, (६) ग्राम्यीकरण तथा सर्वव्यापीकरण।

निर्धारित पुस्तकें—

१. भारतीय संस्कृति और विकास—लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—पुरातत्व

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे जिसमें प्रत्येक १०० अंक का होगा :—

प्रथम प्रश्न पत्र

प्रागैतिहासिक काल ३२३ वी० सी० तक।

निर्धारित पुस्तक—

१. विश्व सभ्यता का इतिहास

द्वितीय प्रश्न पत्र

प्राचीन भारत ६०० बी० सी० से ३१६ ईसवी तक।

निर्धारित पुस्तकें—

१. भारत का प्राचीन इतिहास—ले० घोष
२. प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति—डा० सिंह

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र

विश्व सभ्यता का इतिहास।
(१) ३२३ बी० सी० से ४१६ ईसवी तक।

निर्धारित पुस्तक—

(१) विश्व इतिहास की झलक

द्वितीय प्रश्न पत्र

प्राचीन भारत ३२० ईसवी से १२०० ईसवी तक ।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) प्राचीन भारत का इतिहास—लेखक उपाध्याय
(२) प्राचीन भारत का इतिहास—डा० दुवे

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—इतिहास

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे । जिसमें प्रत्येक १०० अंक का होगा ।

प्रथम प्रश्न पत्र

१६८६ से १८७१ तक योरुप का इतिहास ।

निर्धारित पुस्तक—

(१) योरोप का इतिहास लेखक—डा० सत्यकेतु ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

मध्यकालीन भारत का इतिहास ।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) मध्यकालीन भारत—लेखक डा० ईश्वरी प्रसाद
(२) भारतवर्ष का इतिहास—लेखक डा० आर्शीवादी लाल श्री वास्तव

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

प्रथम पत्र

योरोप का इतिहास (१८७१ के बाद का)

निर्धारित पुस्तकें—

(१) योरोप का इतिहास द्वितीय भाग १—ले० डा० सत्यकेतु ।

(२) आर्वाचीन योरोप भाग २—ले० भटनागर एवम् गुप्ता ।

द्वितीय पत्र

आधुनिक एशिया का इतिहास ।

निर्धारित पुस्तक—

(१) एशिया का इतिहास लेखक—सत्यकेतु ।

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—अर्थशास्त्र

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे । प्रत्येक १०० अंक का होगा ।

प्रथम प्रश्न पत्र

(१) अर्थशास्त्र की परिभाषा, प्रकृति तथा क्षेत्र, (२) रीति, (३) उपभोग, (४) उत्पादन ।

निर्धारित पुस्तकें—

१. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त लेखक—ए० एस० गर्ग

२. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त लेखक—भटनागर तथा अन्य

३. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त एम० एल० सेठ

द्वितीय प्रश्न पत्र

भारतीय अर्थशास्त्र की स्थिति योजना—

१. भारतीय अर्थशास्त्र की स्थिति, २. भारतीय प्राकृतिक साधन, ३. जनसंख्या, ४. कृषि एवं उत्पादन, ५. उद्योग तथा श्रम । (६) यातायात, ७. आर्थिक योजना ।

निर्धारित पुस्तक—

१. भारतीय अर्थशास्त्र लेखक—के० पी० भटनागर

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

विषय—अर्थशास्त्र

प्रथम पत्र

मुद्रा, बैंकिंग तथा राष्ट्रीय आय।

निर्धारित पुस्तकें—

१. भारतीय अर्थशास्त्र के सिद्धान्त—ले० के० पी० भटनागर
२. मुद्रा एवं बैंकिंग—ले० डा० एम० एल० सेठ
३. मुद्रा बैंकिंग तथा अन्तराष्ट्रीय व्यापार—ले० एम० सी० वैश्य

द्वितीय पत्र—विनिमय, वितरण तथा राजस्व

निर्धारित पुस्तकें—

(१) अर्थशास्त्र के सिद्धान्त लेखक—जयप्रकाश
(२) अर्थशास्त्र के सिद्धान्त लेखक—भटनागर
(३) राजस्व लेखक—डा० ए० पी० गौड

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—राजनीति शास्त्र

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे। जिनमें प्रत्येक १०० का होगा।

प्रथम प्रश्न पत्र

राजनीति के सिद्धान्त—

(१) राजनीतिक शास्त्र का क्षेत्र और परिभाषा तथा अन्य सामाजिक शास्त्रों से सम्बन्ध, (२) राज्य की प्रकृति और परिभाषा, (३) राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त, (४) अधिकारों के सिद्धान्त, स्वतन्त्रता और समानता, (५) विधि और नैतिकता, दण्ड के सिद्धान्त, (६) राज्यों का वर्गीकरण, (७) सरकार के प्रकार, (८) सरकार का

संगठन, (६) लोकतन्त्र की संस्थायें, (१०) लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) राजनीति शास्त्र, लेखक—सत्यकेतु।
(२) राजनीति शास्त्र प्रवेशिका, लेखक—सत्य नारायण दुवे।

द्वितीय पत्र

ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, और स्वीटजरलैंड का सम्वैधानिक तुलनात्मक अध्ययन—

निर्धारित पुस्तकें—

(१) प्रमुख विदेशी संविधान, लेखक—इकवाल नारायण।
(२) प्रमुख देशों की शासन प्रणालियां, लेखक—वी० एन० शर्मा।

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

विषय—राजनीति शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र—आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त।

(१) संप्रभुता—उसके प्रकार और सिद्धान्त, (२) राज्य का ध्येय और कार्य, लोक कल्याणकारी राज्य, राज्य और धर्म निरपेक्ष राज्य, (३) उदारवाद, व्यक्तिवाद, उपयोगितावाद और आदर्शवाद, (४) मार्क्सवाद, (५) गांधीवाद और सर्वोदय, (६) राष्ट्रीयवाद, साम्राज्यवाद, अन्तर्राष्ट्रीयवाद, और संयुक्त राष्ट्र संघ।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) आधुनिक राजनीतिक विचार धारायें—लेखक सत्यनारायण दुवे।
(२) राजनीति शासन, लेखक—सत्यकेतु।

द्वितीय प्रश्न पत्र—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और संविधान ।

(१) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन १६ वीं० शताब्दी के सामाजिक और धार्मिक आन्दोलन । दयानन्द, दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, गान्धी, और नेहरू का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान ।

(२) भारतीय संविधान का अध्ययन ।

निर्धारित पुस्तकें—

(१) राष्ट्रीय आन्दोलन और भारतीय संवैधानिक विकास । लेखक—रामनारायण अग्रवाल

(२) भारतीय शासन एवम् राजनीति—लेखक—वी० एम० शर्मा

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—शिक्षा शास्त्र

केवल दो प्रश्न पत्र होंगे । जिसमें प्रत्येक १०० अंक का होगा ।

प्रथम प्रश्न पत्र—शिक्षा मनोविज्ञान—

(१) मनोविज्ञान और शिक्षा, शिक्षक, शिक्षण एवं मनोविज्ञान ।

(२) शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति—विस्तार, सीमायें तथा विधियां ।

(३) मानव, अभिवृद्धि और विकास, वंशानुक्रमण और वातावरण ।

(४) बालक का शारीरिक और प्रेरक विकास ।

(५) संवेगात्मक विकास । सामाजिक विकास, मानसिक विकास, बुद्धि और बुद्धि के विकास की विभिन्न अवस्थायें । व्यक्तिगत भेद तथा शिक्षा ।

(६) सीखना, सीखने की क्रिया एवं प्रक्रिया । अभिप्रेरक और सीखना ।

(७) थकावट, दुश्चिन्ता तथा सीखने में अन्य महत्वपूर्ण तथ्य। स्मृति तथा विस्मृति।

(८) प्रशिक्षण का स्थानान्तरण अथवा अधिगमान्तरण।

(९) अवधान और अभिरुचि। प्रत्यक्षीकरण एवं सीखना। चिन्तन, तर्क और समस्या का हल।

(१०) व्यक्तित्व समायोजन तथा मानसिक स्वास्थ्य, समूह मनोविज्ञान, सामान्य प्रवृत्तियां।

(११) मापन और मूल्यांकन।

(१२) सांख्यिकी एवं अनुसन्धान पद्धतियां।

निर्धारित पुस्तकें—

१—शिक्षा मनोविज्ञान, लेखक सरयू प्रसाद चौबे।

२—शिक्षा मनोविज्ञान, लेखक डा० एस० एस० माथुर।

द्वितीय प्रश्न पत्र

बाल मनोविज्ञान

१—बालमनोविज्ञान की परिसीमा और उसकी विधियां।

२—बाल विकास के मूल तत्व।

३—हिन्दू संस्कार और बाल विकास।

४—विकास में वंशानुक्रम और वातावरण।

५—गर्भस्थ शिशु और नवजात शिशु।

६—बालक का शारीरिक विकास।

७—क्रियात्मक योग्यताओं का विकास।

८—सामाजिक विकास। भाषा विकास और बुद्धि विकास।

९—संवेगात्मक व्यवहार।

१०—अर्थ ग्रहण तथा प्रत्ययात्मक विकास।

११—खेल तथा अभिव्यक्ति के अन्य साधन।

१२—नैतिक तथा धार्मिक विकास।
१३—व्यक्तित्व और उसका विकास।
१४—मनोविश्लेषण में लीविडो का अर्थ और विकास।
१५—सीखने की क्रिया, कल्पना विकास, असाधारण बालक।
१६—बालकों का शारीरिक और मानसिक विकास।
१७—शिशुओं का निदर्शन।

निर्धारित पुस्तकें—

१—बाल मनोविज्ञान, लेखक—सरयू प्रसाद चौवे।
२—बाल मनोविज्ञान, लेखक—भाई योगेन्द्र जीत।

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

विषय—शिक्षा शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र—शिक्षा दर्शन।

१—शिक्षा का अर्थ, स्वरूप और परिभाषा।
२—शिक्षा के कार्य।
३—शिक्षा के उद्‌देश्य तथा निर्माण और उनका वर्गीकरण।
४—शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्‌देश्य।
५—शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य।
६—आधुनिक लोकतन्त्रीय भारत में शिक्षा के उद्देश्य।
७—दर्शन और शिक्षा, शिक्षा में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोग-वाद, और यथार्थवाद।
८—विभिन्न विचारक। प्लेटो, रूसो, जानड्यूवी, दयानन्द, गान्धी, टैगोर।
९—स्वतन्त्रता और अनुशासन।

१०—धर्म तथा शिक्षा ।

११—राज्य तथा शिक्षा ।

१२—लोकतन्त्र तथा शिक्षा ।

१३—व्यक्ति तथा शिक्षा ।

१४—समाज तथा शिक्षा ।

निर्धारित पुस्तकें—

१—शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त लेखक—पाठक एवं त्यागी ।

२—दर्शन और शिक्षा लेखक—सरयू प्रसाद चौवे ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

विषय—भारतीय शिक्षा का इतिहास

(१) वैदिक शिक्षा (२) बौद्ध शिक्षा, (३) मुगल कालीन शिक्षा, (४) भारतीय शिक्षा का रूप, (५) आधुनिक शिक्षा का बीजारोपण (६) ईस्ट इंडिया कम्पनी और शिक्षा पद्धति, (७) शिक्षा की प्रगति, (८) वुड का शिक्षा घोषणा पत्र, (९) भारतीय शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) (१०) शिक्षा की प्रगति, (११) लार्ड करजन की शिक्षा नीति, (१२) राष्ट्रीय आन्दोलन एवं शिक्षा नीति (१३) वैध शासन में शिक्षा की प्रगति, (१४) प्रान्तीय सुशासन में शिक्षा की प्रगति, (१५) प्राथमिक शिक्षा की नवीन योजनायें, (१६) युद्धोत्तर शिक्षा प्रगति, (सारजेन्ट कमीशन) (१७) प्राथमिक एवं बेसिक शिक्षा (१८) माध्यमिक शिक्षा और उसके दोष (१९) विभिन्न शिक्षा आयोग, मुदालियर कमीशन, राधाकृष्णन कमीशन, कोठारी कमीशन, (२०) पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षा ।

निर्धारित पुस्तकें—

१—भारतीय शिक्षा का इतिहास—लेखक जौहरी एवं पाठक ।

२—भारतीय शिक्षा का इतिहास—लेखक भूदेव शास्त्री ।

शिरोमणि परीक्षा प्रथम वर्ष

विषय—आयुर्वेद २००

प्रथम पत्र ५०

१. चरक, सूत्र-स्थान सम्पूर्ण, चिकित्सा स्थान—१० अध्याय ३५

२. सुश्रुत शरीर स्थान (सम्पूर्ण) तथा आयुर्वेद क्रिया शरीर —ले० रणजीतराम आयुर्वेदालंकार (वैद्यनाथ प्रकाशन) १५

द्वितीय पत्र ५०

१. रसतरंगिणी २५

२. भैषज्य रत्नावली २५

तृतीय पत्र ५०

१. व्यवहारायुर्वेद तथा विषविज्ञान—डा० वी० के० पट-वर्धन A. M. S. कृत)

२. आधुनिक चिकित्सा शास्त्र (धर्मदत्त)

अथवा

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान-प्रथम भाग—अशानन्द पंचरत्न

चतुर्थ पत्र ५०

क्रियात्मक परीक्षा उपर्युक्त पाठ्यक्रम के आधार पर

शिरोमणि परीक्षा द्वितीय वर्ष

विषय—आयुर्वेद २००

प्रथम पत्र ५०

१. चरक चिकित्सा स्थान शेष, इन्द्रिय स्थान सम्पूर्ण

२. सुश्रुत कल्पस्थान, उत्तर तन्त्र—१—२० अध्याय

द्वितीय पत्र ५०

१. संक्षिप्त शल्य विज्ञान (मुकुन्द स्वरूप वर्मा कृत)

२. सुश्रुत का शल्य सम्बन्धी भाग

सूत्र स्थान—१, ५, ७, ८, ११, १२, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २१, २२, २३, २५, २६, २७, २८, ३७

निदान चिकित्सा स्थान—

उदररोग (नि ७ चि० १४) अर्श (नि० २, चि० ६) अश्मरी (नि ३ चि० ७) भगन्दर (नि ४ चि० ८) मूढगर्भ (नि० ८ चि० १५) क्षुद्ररोग (निदान १३, चि० २०) भग्न (नि० १५ चि०३) और चिकित्सा स्थान—१, २,

सहायक ग्रन्थ—

सौश्रुती (श्री रमानाथ द्विवेदीकृत)

तृतीय पत्र ५०

१. अभिनव प्रसूति तन्त्र

२. आधुनिक चिकित्सा विज्ञान—(आशानन्द पंचरत्न) द्वितीय भाग

अथवा

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र (धर्मदत्त) (उत्तरार्ध)

चतुर्थ पत्र ५०

क्रियात्मक—परीक्षा उपर्युक्त पाठ्यक्रम के आधार पर

स्नातकोत्तर दीक्षित [बी॰ टी॰] परीक्षा का पाठ्य क्रम

शिरोमणि, शास्त्री, बी॰ ए॰ उत्तीर्ण छात्र प्रविष्ठ हो सकते हैं।

पाठ्य क्रम केवल एक वर्ष का ही है।

प्रथम पत्र

क–[शिक्षा के सिद्धान्त]

सहायक ग्रन्थ

भारतीय शिक्षा सिद्धान्त [अदावल]
शिक्षा के तात्त्विक सिद्धान्त [अग्रवाल]
अध्यापन सिद्धान्त [स॰ प्र॰ चौवे]
शिक्षा सिद्धान्त [स॰ प्र॰ चौवे]
हमारी माध्यमिक शिक्षा [गुप्ता]
शिक्षा विज्ञान [लालजीराम]
अध्यापन कला [सीताराम चतुर्वेदी]
शिक्षण प्रविधि [विश्वनाथ]

द्वितीय पत्र

[क–शिक्षा मनोविज्ञान तथा
ख–शिक्षा सांख्यिकी]

सहायक ग्रन्थ

क–शिक्षा मनोविज्ञान [चौवे]
शिक्षा मनोविज्ञान [लालजीराम]
आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान [ईश्वरचंद्र]
शिक्षा के दार्शनिक आधार [सिंह]
ख–शिक्षामें सांख्यिकी की गणना [गुप्त]

तृतीय पत्र

[क–विद्यालय का संगठन, तथा
ख–स्वास्थ्य विज्ञान]

सहायक ग्रन्थ

क–पाठशालाका प्रबन्ध [जे॰ वी॰व्यास]
शिक्षालय व्यवस्था [एम॰ एल॰ जैन]
नवीन भारत के पब्लिक स्कूल
[जगदीशचन्द्र शास्त्री]
शिक्षालयों का संगठन
[नवलकिशोर, त्रिवेणीप्रसाद]
ख–स्वास्थ्य विज्ञान [मुकुन्दस्वरूप]

चतुर्थ पत्र

[क–विशेष भाषा, तथा
ख–विशेष विषयों का शिक्षण]

सहायक ग्रन्थ

क–भाषा की शिक्षा [सीताराम चतु॰]
भाषा शिक्षा [करुणापति]
हिन्दी कविता पाठन [रमणीकान्त]
संस्कृत शिक्षण [सीताराम चतु॰]
ख–भूगोल शिक्षाके सिद्धान्त [चंद्रकांत]
भूगोल शिक्षा पद्धति [आत्मानन्द]
इतिहास शिक्षण [वेणीमाधव]
गणित शिक्षा के सिद्धान्त [किचलू]
सामाजिक अध्ययनकी शिक्षा [वे॰ मा॰]

पंचम पत्र

भारतीय शिक्षा का इतिहास]

सहायक ग्रन्थ

ख—आधुनिक शिक्षा का विकास
[सीताराम जायसवाल]

प्राचीन शिक्षा पद्धति का इतिहास
[सीताराम जायसवाल]

शिक्षा प्रणालियां और उनके प्रवर्तक
[सीताराम चतुर्वेदी]

विश्व के महान् शिक्षक

भारत में अंग्रेजी शिक्षा का इतिहास

शिक्षा मंत्रालय के प्रतिवेतन

षष्ठ विशेष पत्र

[निम्न में से एक का विशेषाध्ययन]

बुनियादी शिक्षा

अतिरिक्त प्रवृत्तियाँ

पुस्तकालय व्यवस्था

स्वास्थ्य शिक्षा

स्नातकोत्तर आचार्य परीक्षा का पाठ्य क्रम

शिरोमणि, शास्त्री, संस्कृत एम० ए० प्रविष्ट हो सकते हैं।

१. वेदाचार्य परीक्षा

क—ऋग्वेद

प्रथम खण्ड

१. निरुक्त सम्पूर्ण	३०
ऋक्प्रातिशाख्य	४०
वृहद्देवता प्रथम मण्डल	३०
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०
ऋग्वेद संहिता १-३ मण्डल स्वामी दयानन्द कृत भाष्य	७०
३. ऐतरेय ब्राह्मण १-८ पंजिका	६०
ऐतरेय आरण्यक १-४ अध्याय	४०

द्वितीय खण्ड

१. आश्वलायन श्रौत सूत्र	४०
आश्वलायन गृह्य सूत्र	३०
आधान, दर्श पूर्णमास पद्धति	३०
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०
ऋग्वेदादि संहिता ४-६ मण्डल स्वामी दयानन्द कृत भाष्य	७०
३. वैदिक साहित्य का इतिहास	४०
प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	६०

अथवा

ख–शुक्ल यजुर्वेद [माध्यन्दिन शाखा]

प्रथम खण्ड

१. निरुक्त सम्पूर्ण	४०
शुक्ल यजुः प्राति शाख्य	३०
कात्यायन श्रौत सूत्र १-४ अ०	३०
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०
यजुर्वेद संहिता १-१५ अ० स्वामी दयानन्द कृत भाष्य	७०
३. शतपथ ब्राह्मण	६०
वृहदारण्यक	४०

द्वितीय खण्ड

१. कात्यायन श्रौत सूत ५.३० अ०	४०
पारस्कर गृह्यसूत्र	३०
आधान, दर्श पूर्णमास पद्धति	३०
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०
यजुर्वेद संहिता १६-४० अ० स्वामी दयानन्द कृत भाष्य	७०
३. वैदिक साहित्य का इतिहास	४०
प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	६०

अथवा

ग-कृष्ण यजुर्वेद [तैत्तिरीय शाखा]

१. निरुक्त सम्पूर्ण	४०	१. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र उत्तरार्द्ध	३०
तैत्तिरीय प्रातिशाख्य	३०	बोधायन गृह सूत्र	३०
आपस्तम्ब स्रौतसूत्र	३०	आधान दर्श पूर्णमास पद्धति	४०
२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०	२. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०
तैत्तिरीय संहिता १-५ काण्ड [सायण भाष्य]	७०	तैत्तिरीय संहिता ६-१० काण्ड [सायण भाष्य]	७०
३. तैत्तिरीय ब्राह्मण	५०	३. वैदिक साहित्य का इतिहास	६०
तैत्तिरीय आरण्यक	५०	प्रौढ़ संस्कृत निवन्ध	४०

३. व्याकरणाचार्य परीक्षा

क-प्राचीन व्याकरण

प्रथम खण्ड		द्वितीय खण्ड	
१. काशिका १-२ अध्याय	४०	१. काशिका षष्ठ अध्याय	४०
महाभाष्य १-२ अध्याय	६०	महाभाष्य षष्ठ अध्याय	६०
२. काशिका तृतीय अध्याय	४०	२. काशिका ७-८ अध्याय	४०
महाभारत तृतीय अध्याय	४०	महाभाष्य ७-८ अध्याय	४०
वाक्यपदीय [पूर्वार्द्ध]	२०	वाक्यपदीय उत्तरार्द्ध	२०
३. काशिका ४-५ अध्याय	४०	३. व्याकरण शास्त्र का इतिहास	४०
महाभाष्य ४-५ अध्याय	६०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	६०

अथवा

ख-नवीन व्याकरण

प्रथम खण्ड		द्वितीय खण्ड	
१. लघुशब्देन्दुशेखर स्वादि सन्ध्यन्त	६०	१. परिभाषेन्दु शेखर	५०
महाभाष्य १-४ आह्निक	४०	वैयाकरण भूषणसार	५०

२. लघुशब्देन्दु अ. पु.-स्त्री प्रत्ययान्त	६०	२. लघु मञ्जूषा	६०
महाभाष्य ५–९ आह्निक	२०	व्युत्पत्तिवाद प्रथमान्त	२०
वाक्यपदीय [पूर्वार्द्ध]	२०	वाक्यपदीय उत्तरार्द्ध	२०
३. लघुशब्देन्दुशेखर कारक-अव्ययीभाव		व्याकरण शास्त्र का इतिहास	४०
महाभाष्य अङ्गाधिकार	५०+५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	६०

४. साहित्याचार्य परीक्षा

प्रथम खण्ड		द्वितीय खण्ड	
१. काव्य प्रकाश	७०	१. नाट्य दर्पण	७०
साहित्यालोचन	३०	अभिनव भारती १–२ अ०	३०
२. ध्वन्यालोक	७०	२. रस गङ्गाधर उपमान्त	७०
साहित्य शास्त्र बलदेव उपाध्याय	३०	अभिनव भारती षष्ठ अध्याय	३०
३. वक्रोक्ति जीवित	७०	३. अलंकार शास्त्र का इतिहास	४०
पाश्चात्य काव्य शास्त्र	३०	संस्कृत साहित्य का इतिहास	२०
[दिल्ली वि० वि० प्रकाशन]		प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	४०

५. दर्शनाचार्य परीक्षा

क–प्राचीन न्याय वैशेषिक

[प्रथम खण्ड]		[द्वितीय खण्ड]	
१. न्यायदर्शन सम्पूर्ण		१. न्यायवार्तिक प्रथमाध्याय	
वात्स्यायन भाष्यसहित	१००	तात्पर्य टीका सहित	१००
२. वैशेषिक दर्शन प्रशस्तपाद भाष्य		२. न्यायवार्तिक अवशिष्ट भाग	
किरणावली तथा कन्दली सहित	१००	तात्पर्य टीका सहित	१००
३. न्यायमञ्जरी प्रमाणमात्र	५०	३. न्यायशास्त्र का इतिहास	५०
न्याय कुसुमाञ्जलि [हरिदासी]	५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	५०

[अथवा] ख—नव्यन्याय

१. जागदीशी व्यधिकरण, पक्षता सामान्य लक्षण प्रकरण	१००	१. गादाधरी-सामान्यनिरुक्ति सव्यभिचार सत्प्रतिपक्ष प्रकरण	१००
२. शब्दशक्तिप्रकाशिका	५०	२. व्युत्पत्तिवाद प्रथमान्त	५०
वैशेषिक उपस्कार भाष्य	५०	शक्तिवाद प्रथमान्त	५०
३. न्यायमञ्जरी प्रमाण मात्र	५०	३. न्यायशास्त्र का इतिहास	५०
न्याय कुसुमांजलि [हरिदासी]	५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	५०

[अथवा] ग—सांख्य योग

१. सांख्य कारिका तत्त्व कौमुदी गौडपादभाष्य सहित	१००	१. तत्त्वसमास [सर्वोपकारिणी]	५०
		सांख्यप्रदीप तथा योगसार संग्रह	५०
२. सांख्य प्रवचन तथा भाष्य	५०	२. योगदर्शन व्यास भाष्य [वाचस्पति टीका तथा योगवार्तिक]	१००
योगसूत्र भोजवृत्ति	५०		
३. भगवद्गीता शांकरभाष्य १-६ अ०	५०	३. सांख्यशास्त्र का इतिहास उदयवीर	५०
योग चिन्तामणि [शिवानन्द]	५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	५०

[अथवा] घ—पूर्व मीमांसा

१. न्यायमाला विस्तर १-६ अ०	५०	१. शावर भाष्य ४-६ अ०	५०
मीमांसा न्याय प्रकाश	५०	शास्त्रदीपिका ४-८ प्र०	५०
२. शास्त्र दीपिका तर्कपाद	४०	२. श्लोकवार्तिक	४०
तौतातिकमत तिलक १ अ०	३०	भाट्ट रहस्य द्वितीयान्त	३०
वृहती प्रभाकर कृत १ पाद	३०	प्रकरण पंजिका	३०
३. मीमांसादर्शन शा० भा० १-३	५०	मीमांसा शास्त्र का इतिहास	५०
शास्त्रदीपिका १-३ अध्याय	५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	५०

दर्शनाचार्य परीक्षा

[अथवा] ङ–शाङ्कर वेदान्त

प्रथम खण्ड

१. वेदान्त परिभाषा ४०
पंचदशी तृप्तिदीपान्त ३०
ईश, केन कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
शा० भा० तैत्तिरीय, ऐतरेयोपनिषद ३०
२. ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य
चतुःसूत्री तर्कपाद भामती सहित १००
३. सिद्धान्तलेश संग्रह १ परि० ५०
खण्डन खण्ड खाद्य १ परि० ५०

द्वितीय खण्ड

१. छान्दोग्य १-४ ३०
वृहदारण्यक १-४ ३०
शांकरभाष्य सहित
चित्सुखी प्रथम परिच्छेद ४०
२. संक्षेप शारीरिक प्रथमाध्याय ५०
विवरण प्रमेय संग्रह प्रथम सूत्र ५०
३. वेदान्त दर्शन का इतिहास ५०
प्रौढ़ संस्कृत निवन्ध ५०

[अथवा] च–रामानुज वेदान्त

१. सिद्धान्त विन्दु [मधुसूदन] ४०
ईशादि आठ उपनिषद् रा० भा० ३०
सिद्धित्रय [यामनमुनि] ३०
२. ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य
प्रथमाध्याय का प्रथमपाद ४०
छान्दोग्य उपनिषद् ३०
वेदार्थ संग्रह ३०
३. तत्वमुक्ताकलाप ५०
अध्याय गिरिवज्र १ अ० ५०

१. तत्व सन्दर्भ [जीव गोस्वामी] ५०
न्याय सिद्धांजन [वे० दे०] ३०
प्रस्थान रत्नाकर [पुरुषोत्तम] ३०
२. ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य
अवशिष्ट सम्पूर्ण भाग ४०
वृहदारण्यकोपनिषद् ३०
पदार्थ संग्रह [पद्मनाभ] ३०
३. वेदान्तदर्शन का इतिहास ५०
प्रौढ़ संस्कृत निवन्ध ५०

[अथवा] छ–साधारण दर्शन

१. न्याय वात्स्यायन भाष्य १-३अ०	३०	१. ब्रह्मसूत्र शा० चतुसूत्री, तक०	४०
वैशेषिक प्रशस्तपाद भाष्य	३०	ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य चतुसूत्री	३०
सांख्य प्रवचन भाष्य १ अ०	३०	योग व्यास भाष्य	३०
२. ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिणी	४०	२. अभिधर्म कोष १-२	४०
स्याद्वाद रत्नाकर	३०	चतुःशतकम [आर्यदेव]	३०
सर्व दर्शन संग्रह जैन, प्रत्यभिज्ञा	३०	सर्व दर्शन संग्रह बौद्ध दर्शन	३०
३. शास्त्र दीपिका तर्कपादान्त	५०	३. भारतीय दर्शन का इतिहास	५०
प्रकरण पंजिका प्रमाण पारायण	५०	प्रौढ़ संस्कृत निबन्ध	५०

मैं श्री वृन्दावन गुरुकुल के वार्षिक समारोह में शरीक हुआ और मुझे भी एक प्रतिष्ठार्थं पदवी [विद्यावारिधि] दी गई। मैं इसके लिये बहुत अनुगृहीत हूँ। यह संस्था ५० वर्षों से अधिक से काम कर रही है और इसके स्नातक अनेकानेक स्थानों में काम कर रहे हैं। उसी रीति से यहाँ शिक्षा दी जाती है जो गुरुकुलों में प्रचलित है और इसीलिये यह लोकप्रिय भी है। जनता की सहायता से ही इसका काम चलता आया है। इसे सब प्रकार की सहायता मिलनी चाहिये। मैं इसकी दिन प्रतिदिन उन्नति चाहता हूँ।

ह० राजेन्द्र प्रसाद 'विद्या-वारिधि'
भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति

दि० २५-१२-५६

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि वृन्दावन गुरुकुल में, मैं आज आ सका। [दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह के जुलूस में सम्मिलित होने के लिये गये हुये होने से उस समय] छात्र तो नहीं थे पर जो कुछ वातावरण मैंने देखा उससे मैं प्रभावित हुआ। गुरुकुल प्रणाली हमारे देश की पुरानी और सबसे अच्छी शिक्षापद्धति है। इसको केवल हमें कायम ही नहीं रखना पर इसके अच्छे तत्त्वों को हमारे साधारण शिक्षालयों में प्रवेश करना है। मैं यहाँ के कार्यकर्त्ताओं को बधाई देता हूँ कि कई कठिनाइयों के होते हुये भी वे इस संस्था की सेवा कर रहे हैं—मेरी यह हार्दिक कामना है कि यह गुरुकुल बराबर फूलता फलता रहे।

ह० का० श्रीमाली
भारत गणतन्त्र के शिक्षा-मन्त्री

दि० २६-१२-५६

राजकीय संस्कृत आयोग की सम्मति—
१९५७

The members of the Government of India Sanskrit Commission in course of their itinerary all ower India to take evidence on the question of Sanskrit studies in India visited the Vrindaban Gurukul Vishwavidyalaya today and were very deeply impressed by the work of very great importance that is being done in the Vishwavidvlaya. The Sanskrit and Hindi publications of the Vishwavidyalaya some of which deal with abstruse branches of Sanskrit studies, present a very high standard of scholarship and the members of the commission offer their felicitations to the Gurukul Vishwavidhalya and their best wishes for future progress in the service of Sanskrit and Indian culture.

Sd/–1. Suniti Kumar Chatterji–Chairman, Sanskrit Commission.

2. R. N. Dandeker–Member:Secretary.

3. V.-Raghavan, Member.

4. Jayant Krishana Hari Krishana Deve, Member.

5. Viswa Bandha Member.

6. T. R. Murti, Member Sanskrit Commission.

May 13, 1957.